सेलम ज्योति

सेलम ज्योति

संरक्षक
श्री. उ.सुब्बाराव
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्शदाता
अ.अण्णादुरै
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडली
राजभाषा अनुभाग, सेलम

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। इससे संपादक मंडली का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

संपर्क कार्यालय : राजभाषा अनुभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल, सेलम-636005
रेलवे फोन – 65030/32, बी.एस.एन.एल फोन -04272336833, ई-मेल- ra@sa.railnet.gov.in

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में गृह पत्रिका का प्रकाशन प्रशंसनीय है। यह समस्त कर्मचारियों को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जिसमें सभी अपने विचारों का आदान-प्रदान सहजता से कर सकते हैं । पत्रिका को सफल बनाने में सहयोगी रचनाकारों का प्रयास सराहनीय है। आशा करता हूँ कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करते हुए आप सब राजभाषा कार्यान्वयन में सदैव इसी प्रकार अपना सहयोग देते रहेंगे ।

संपादक मंडल

अंतरंग

1.	लक्षद्वीप – भारत के प्रवाल द्वीप	डॉ. सुबेयदा ए मणिकफन
2.	राजस्थान रत्नभक्त मीराबाई	डॉ एन गुरुमूर्ति
3.	तनाव	मोहन
4.	संपर्क भाषा के रूप में हिंदी	रूपा मंडल
5.	दशरथ मांझी –एक प्रेरणा स्त्रोत	अमित कुमार
6.	अपनी जुबानी, डीज़ल शेड की कहानी	लोकेश कुमार मीना
7.	तमिलनाडू में हिंदी प्रचार कार्य	निमिता .के.वी
8.	पहाडों की रानी 'ऊटि'	जी.भुवनेश्वरी
9.	राजस्थान के प्रमुख पर्यटन, दर्शनीय धार्मिकस्थल	नंदलाल मीना
10.	नक्सली कलम	तारकेश्वर महतो "गरीब"
11.	भारतीय रेल – पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली	स्मिता वी.एस
12.	तमिल भाषा व साहित्य का संक्षिप्त परिचय	पी अशोकन
13.	एक साथी यात्री	रेखा आर
14.	भारत में रोजगार	कनिमोष़ी
15.	दूरदर्शन	अभिषेक कुमार
16.	'हिंदी बड़ी महान'	सपना सोनी
17.	हिंदी और भारतीय भाषाओं का आंतरिक संबंध: (एक विवेचना)	सपना सोनी
18.	पहला प्यार	प्रवीण कुमार
19.	बच्चों की परवरिश और संस्कार	सुनिल कुमार

लक्षद्वीप – भारत के प्रवाल द्वीप

डॉ. सुबेयदा ए मणिकफन
अमुचिअधी, पोत्तनूर जंक्शन

समस्त केन्द्रशासित प्रदेशों में लक्षद्वीप सबसे छोटा है। लक्षद्वीप द्वीप समूह की उत्पत्ति प्राचीन काल में हुई। ज्वालामुखी विस्फोट से निकले लावा से हुए है। यह भारत की मुख्य भूमि से लगभग 280-480 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में अरब सागर में उपस्थित है। लक्षद्वीप समूह में कुल 36 द्वीप हैं पर केवल 10 द्वीपों में ही जनजीवन है। ये कवरट्टी, अन्द्रोत,मिनिकॉय, कल्पेनी, कठमठ , चेतलेत, अमिनी और किलतन हैं। लक्षद्वीप नाम का अर्थ है - एक हजार द्वीप।

1 नवंबर 1956 को इन द्वीपों को मिलाकर केंद्रशासित प्रदेश बना दिया गया तथा तब से इसका शासन केंद्र सरकार के प्रशासन के माध्यम से चल रहा है। सन् 1973 में लक्षद्वीप, मिनिकॉय और अमीनदीवी द्वीप समूहों का नाम लक्षद्वीप कर दिया गया। लक्षद्वीप की राजधानी कवरत्ती है जो सबसे बडा शहर है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की आबादी 64473 है। लक्षद्वीप के कुल क्षेत्रफल 32 वर्ग किलो मीटर है और घनत्व 205 वर्ग किलो मीटर है । सारे द्वीप मिलाकर एक जिला होता है। मही, अंग्रेजी, मलयालयम, महल और हिंदी बोली जाती है।

इन द्वीपों के पूर्व इतिहास के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। समझा जाता है कि पहले पहले लोग आकर अमिनी, अन्द्रोत, कवरत्ती, अगत्ति द्वीपों में बसने से पहले यह विश्वास किया जाता है कि द्वीप में बसनेवाले मूल लोग हिंदू थे और लगभग चौदहवीं शताब्दी के किसी समय अरब व्यापारियों के प्रभाव में आकर मुसलमान बन गए। परंतु हाल में पूरा लक्षद्वीप खोज से पता चलता है कि छठी अथवा सातवी शताब्दी के आसपास यहाँ बौद्ध रहते थे। सर्वप्रथम इस्लाम धर्म अपनाने वाले जिन लोगों और निवासियों से पता चलता है कि आठवीं शताब्दी के समय से मालूम होता है , स्थानीय परंपरागत सत्य - कथाओं के अनुसार इस द्वीप में अरब सूफी उबैदुल्लाह हिजरी इस्लाम को लेकर यहाँ आए। अब इस प्रदेश के सारे निवासी इस्लाम धर्म के है। लक्षद्वीप के द्वीप छोटे छोटे होते हैं। चौडाई में 1.6 से अधिक कोई नहीं। लगभग सभी द्वीपों पर होटल हैं। लक्षद्वीप की मिट्टी आम तौर पर रेतीली है जो मूंगा से मिलती है। अमीदीवी समूह के

सबसे उत्तरी द्वीप और मिनिकॉय सबसे दक्षिणी द्वीप है। इसके पश्चिमी भाग में एक बहुत ही बड़ा समूह है

जो लगभग जो छह किलो मीटर दूर है। द्वीप का वेधशाला सबसे पुराने में से एक है जिसका निर्माण 1885 में हुआ था। यहाँ के लोग महल बोलते हैं इस भाषा के वर्णाक्षर माली द्वीप से मिलते जुलते हैं।

यहाँ का प्रमुख फसल नारियल है और प्रति वर्ष 580 लाख नारियल का उत्पादन होते हैं। यहाँ के नारियल जैव उत्पादन के रूप में जाना जाता है। भारत में नारियल का उत्पादन लक्षद्वीप में होता है। प्रति हेक्टेयर, उपज 22310 नारियल हैं। लक्षद्वीप में प्राप्त नारियलों में विश्व के अन्य नारियल की तुलना में सर्वाधिक तेल (82%) मिलता है।

मछली पालन, मछली पकड़ना यहाँ का एक अन्य प्रमुख कार्य है।। इसके चारों ओर के समुद्र में मछलियाँ बहुत अधिक हैं। यहाँ की टूना मछील मशहूर है और टूना का निर्यात भी होता है।

जहाज और हवाई जहाज के द्वारा कोचिन से लक्षद्वीप पहुंच सकता है। द्वीप वासियों और वहाँ के कर्मचारियों के अलावा पर्यटकों को आने के लिए लक्षद्वीप कार्यालय में मिलना है। हवाई अड्डा अगत्ति द्वीप में स्थित है। वहाँ से दूसरे द्वीप जाने के लिए हेलिकॉप्टर तथा फेरी सेवाएँ हैं। अगत्ति के पास बंगारम द्वीप जो सिर्फ पर्यटकों के लिए खुला है। पर्यटकों के लिए सबसे अच्छा मौसम सितंबर-फरवरी है। यहाँ डाइविंग एवं एक्स्ट्रा डाइविंग का अनुभव कर सकते हैं।

प्राकृतिक परिदृश्य , रेतीली समद्रतट, वनस्पतियों और जीवों का बहुतायत और एक भीड भरी जीवन शैली की अनुपस्थिति लक्षद्वीप के रहस्य को बढाती है।

*****

राजस्थान रत्नभक्त मीराबाई

डॉ एन गुरुमूर्ति
वरि अनुवादक, सेलम मंडल

भारत के घर-धर में तो मीराबाई का नाम गुंजता हे। अन्य देंशों मं जहाँ ईश्वर भक्ति तथा उच्च संगीत को मान दिया जाता है वहाँ भी उनके भजनों को मधुर संगीत सुनाई देता हे। मीरा कोई अपवाद नहीं। उनका जीवन लोकोक्तियों में खो गया है। मीरा के बारे में समझने के लिए एक दृष्टि उस युग पर और उस युग के राजस्थान पर डालेंगे। राजस्थान किसी समय अवश्य उपजाऊ रही होगी। परंतु आज य राज्य एक मरुभूमि है। यह निश्चय नहीं कीं जा सकता इसकी वर्तमान स्थिति कबसे है।

नाम के बारे में कोई निश्चित मत नहीं। इतिहास में सातवीं शताब्दी तक राजपूतों के बारे में कोई उल्लेख नहीं। हर्षवघ्रन के काल तक राजपूतों का वर्णन कहीं भी नहीं मिलता। बारहवी शताब्दी के अंत में ही राजपूतों के बारे में जानकारी मिलती है। तुहम्मद गोरी से टक्कर हुई पृथ्वीराज चौहान और जयचंद ये दोनों राजपुत थे। राजपूतों की उत्पत्ति के बारे में यह कहानी प्रसिद्ध है कि उनका जन्म अग्नि से हुआ। क्षत्रियों का ह्रास हो गया तो एक बहुत बडा यज्ञ रचाया गया। यज्ञ में नए वीरों का जन्म हुआ जो राजपूत कहलाए। इतिहास के अनुसार सातवीं-आठवीं शताब्दी के बीच आबू पर्वत पर यह यज्ञ रचाया गया था। इसमें बाहर से आयी जातियों-हुण, सिथ्यन(शक) आदि को नए गौत्र प्रदान किए गए थे। ऐसा ही एक यज्ञ उस समय रचाया गया था जब महमूद गजनी के बहुत से साथी पकडे गए थे तथा उन्हें रंग-रूप के अनुसार ब्राह्मण वैश्य आदि बनाया गया था। कुछ भी हो राजपूतों की परंपरा कुछ विचित्र थी जो भारतीय परंपरा से मेल नहीं खाती थी। सती और जौहर क प्रथाएँ प्राय: मध्य एशिया की बरबर जातियों में पाई जाती थीं। यह इतिहासकारों का मत है।

राजस्थान के लोक साहित्य के अनुसार बापा रावल प्रथम महान राजपूत शासक हुआ। राजस्थान का दूसरा महान शासक राज कुभा हुआ। उसने विभिन्न राज्यों को एक सूत्र में पिरोकर एक संघ की स्थापना की। बीजापूर के सुल्तान पर उसी विजय का हाल मिलता है। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने चित्तौड में एक विजय स्तंभ बनवाया तो आज तक स्थित है। चित्तौड़ उसकी राजधानी थी। चित्तौड़ उनकी राजधानी थर। वहाँ उसने एक मंदिर स्थापित किया जिसे मीरा का मंदिर कहते हैं। उसने जयदेव की रचना 'गीत गोविंद' पर टीका लिखी थी। राजपूत तलवार की पूजा करते थे तथा भवानी का इष्ट मानते थे । ये दोनों शौर्य और बलिदान की द्योतक हैं।

एक राजपूत वीरांगना को राजपाट के काम की शिक्षा और शस्त्र-विद्या दोनों दी जाती थी। पद्मावती की कहानी को ऐतिहासिक नहीं माना जाता किंतु जायसी के 'पद्मावत ' काव्य से यह सिद्ध होतो है कि राजपूत रानियाँ अपने सम्मान की रक्षा हेतु बडे से बडे बलियाँ बनाने में न हिचकिचाती थीं।

मीराबाई का जन्म ऐसे वातावरण में हुआ। ऐसी परिस्थियों में उसका कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम असीम भक्ति और ऐश्वर्य त्याग तक आश्चर्य ही था। विशेषत: ऐवर्य , त्याग क्योंकि आजकल लोग ऐश्वर्य पाने के लिए क्या क्या करते हैं तथ् ऐश्वर्य पाते ही वही लोग अपने आपको महान मानते हैं।

इतिहास से पता चला है कि मीराबाई राणा सांगा के समकालीन थी । राणा सांगा ने खानुआ नामक स्थान पर 1527 ई में बाबर को नाको चले चबवाए थे। मीराबाई को राणारसांगा के पुत्र भोजराज की पत्नी था विधवा माना जाता है। इस हिसाब से उनके जन्म की तारीख 1495-1503 ई के बीच पड़ती है। विवाह की तिथि तथा विवाह के समय उसी आयु निश्चित नहीं हो पायी। भोजराज की मृत्यु की तिथि का वर्ष 1523 बताई जाती है।

कहावत है कि एक मेले में से तुर्क 240 राजपूत कन्याओं को 1491 ई में मुक्त करवसश्स गया। मुक्त करनेवालों में मीरा के पितामह राओ दूरा भी थे। मीरा 1565 ई में साधु बनी थी।

मीरा के जीवन से संबधित भ्रान्त धाराणाएँ लोक में प्रचलित हैं। बहुत से प्रबुद्ध विचारकों ने कहा है कि मीरा न किसी सम्प्रदाय में दीक्षित हुई और न ही उसने किसी को गुरु बनाया। मीरा मधुरा भक्ति कं अंतर्गत मदीया रति की आराधिका थी। यह मदिया रति ही ब्रज का गोपीभाव है। तदीया रति में भक्त अपने आराध्य से कहता है 'मैं तेरा हूँ '। मदीया रति में भक्त कहता है।' तुम मेरे हो ' इस स्थिति में आराध्य ही भक्त का सर्वस्व होता है। फिर उसे किसी पथ अथवा गुरु की आवश्यकता नहीं होती। गोपीभाव में स्व-सुख वासना का सर्वथा अभाव होता है। मीरा ने यही गोपीभाव प्राप्त कर लिया था । इसलिए मीरा ने कहा 'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई '।

अग्रसर होने से पूर्व कुछ बातों का उल्लेख आवश्यक है । (कहा जाता है/अनुमान ही होगा)

(1) मीरा तथा गोस्वामी तुलसीदास का आपस में पत्र-व्यवहार था

(2) सम्राट अकबर और तानसेन मीरा से द्वारका में मिले थे

(3) मीरा के बचपन की किसी घटना का उल्लेख नहीं मिलता। मीरा के बाल्यकाल के बारे में अनुमान ही लगाया जा सकता।

(4) जिन परिस्थितियों में वह थी, कुछ-न-कुछ बाते तो हुई होंगी ।

(5) चौरासी वैष्णव की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता इन दोनों ग्रंथों में मीरा का वर्णन है ।

(6) मीरा ने बीजा वर्गी महाजन को शाप दिया था 'तेरे वंश में या तो संतान न होगी यदि संतान होगी तो धन न होगा '

(7) मीरा को संताप देनेवाला राजा का नाम विक्रमादित्य । रणथंभौर का राजा थे ।

(8) जयमल के साथ रहते-रहते युद्ध विद्या तो उसने सीखी ही होगी ।

मीरा का एक-एक पद और उसके नीचे टिप्पणी

(1) मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई / जाके रि मोर मुकुट मेरो पति सोई

(गिरिधर गोपाल ही उसका वास्तविक पति है)

(2) तुम देखया बिन कल न परत हैं/हियो फटत मेरी छाती/मीरा कहे प्रभु कब रे मिलेंगे/पूर्व जन्म के साथी

(कृष्ण जन्म जन्मांतर से उसका पति रहा है)

(3) म्हाने चाकर राख्योजी/गिरधर गोपाल, चाकर राख्योजी/चाकर रहसूं, बाग लगासूं/नित उठ दरसन पासूं/

बृंदावन की कुंज गलिन में/गिंद लीला गागूं

(मीरा का कृष्ण के साथ तरूण प्रेम था, इस प्रेम का सूत्रपात विवाह से पहले हुआ)

(4) छांडो नागर मोरी बहियां गहो ना/ मैं तो नार पराये घर की/मेरे भरोसे गोपाल रहो ना/ जो तुम मोरी बहियां गहन हो/नयन जोर मोरे प्राण हरो ना/वृंदावन की कुंज गलिन में/रीत छोडअनरीत करो न

(ऐसा प्रतीत होता है कि उसका कृष्ण-प्रेम विवाह से पहले ही परवान चढ़ चुका था । यह पद निश्चय ही उस समय का है जब कीरा का विवाह हो चुका था)

(5) आए मेरे सजना फिरि गए आंगन में अभागन रही सोई री

फारूंगी चीरू, तोरूं गल कंठा/रहेगी बैरागन होई री/चूरियाँ फोरूं मांग बखेरूं

कजरा मैं डालूं धोई री

(इसमें विद्रोह की गंध आती है क्योंकि यह पद मीरा के वा होने के बाद का है)

(6) सांप पिटारा राणा ने भेज्या//मीरा हाथ दियो दाय/न्हाय-धोय जब देखन लागी/सालिगराम गई पाय/

जरह का प्याला राणा भेज्या/ अमृत दीन्य बनाय/न्हाय-धोये जब पीवण लागी/हो अमर ओ चाय

सूल सेज राणा ने भेजी दीज्यो मीरा सुलाय /सांझ भई मीरा सोवण लागी/मानो फूल बिछाय

(राणा ने उसे मारने का प्रयत्न किया)

(7) जोगी मत जा, मत जा/पायं परूं चेरी तेरी/प्रेम भक्ति को पैंडो ही न्यारा/हमको गैल बता जा/अगार चंदन की चिता जराऊं/अपने हाथ जलाजा/जल-जल भई भस्म की ढेरी/अपने अंग लगा जा/मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर/जीत से जीत मिला जा

(उसे संताप देनेवाला राणा कौन था ? किस राणा से उसने विद्रोह किया ? यह संताप उसे क्यों दिए गए ? सिर्फ अंतिम प्रश्न का उत्तर मिलता है । जोगियों, साधुओं तथा संतों के प्रति इतनी श्रद्धा राजपूत रानियों के लिए कोई सम्मान की बात न थी । हो सकता है राणा ने उसे ऐसी संगति से रोका-टोका हो मीरा इसको अपना धर्म-कर्म समझती । उसको इस पथ को छोडना तो कल्पना से दूर था। निष्कर्ष यह है कि मीरा जिस समाज में रहती थी वह अशिक्षित, संकीर्ण विचार रखने वाला समाज था । नृत्य तथा गीत मीरा की जान है पर इसकी वहज से अंतत: उसे अपना घर-बार छोड़ना पड़ा ।)

(8) तेरा कोई रोकण हार/मगन हो मीरा चली/लाज सरम कुल की मर्यादा/सिर से दूर करी/मान अपमान दोऊ घर पटके/निकसी हूँ ज्ञान गली/सेज सुखमण सोहे/सुभ है आज घरी/तुम जाओ राणा घर आपणे/मेरी तेरी नाहि बनी (विद्रो का स्वर)

(9) द्रौपदी की लाज राख्यो/बाप बढायो चीर/भक्त कारण रूप नरासिंह/धर्यो आप सरीर/हिरण्यकश्यपु मारि लीन्हो/धर्यो नाहिं धीर/बूढते गजराज राख्यो/कियो बाहर नीर/दास मीरा लाल गिरिधर/दुख जहां वहां पीर

(किस विश्वास के सहारे मीरा संताप सहती रही तथा उसने विद्रोह नहीं किया इसकी झलक उपरोक्त पद में मिलती है । मीरा मेडता छोड़कर वृंदावन गयी । मथुरा से बृंदावन आई । कृष्ण का अंतिम जीवन द्वाराका में बीता था । इसलिए वहाँ रणछोर का मंदिर था, शायद ये ही कारण मीरा के द्वारिका जाने के थे । भाषा के प्रमियों के लिए सुखद अनुभूति है कि मीरा की कृतियाँ राजस्थानी भाषा में हैं, बृंदावन में रहने पर ब्रजभाषा की पाण चढी और द्वाराका रहते गुजराती की)

लोकोक्तियों के आधार पर मीरा के अंतिम दिन :

राणा को अपने किए का पश्चाताप हुआ । आपने मीरा को लिवा लाने के लिए अपने राजदूत भेजे । मीरा ने कहा कि उसे अपने भगवान से आज्ञा लेनी होगी । वह मंदिर में गई किंतु लौटकर नहीं आयी। कुछ देर बाद उसकी खोज हुई देखा कि मीरा नहीं है । यह मूर्ति गुजरात के डाकोर इलाके में है । मूर्ति के मुख से आंचल का टुकडा था । लोगों ने पहचाना कि यह मीरा का आंचल था और वह मूर्ति में समा गई थी । श्रद्धालु लोगों को आंचल का पल्लू अब भी उसके मुँह से दिखाई देती हे

मीरा के बारे में हिंदी साहित्यकारों की टिप्पणियाँ

(1) डॉ एम शेषन्

(1) मीरा ने जीवन कर्म को रचना कर्म में पर्यवासित करने की अद्‌भुत क्षमता दिखायी

(2) मीराबाई में कबीर का आत्मविश्वास, बेपरवाही, घर फूंक मस्ती, तुलसी की अगाध आस्था, सुर की अनन्यथा, घनानंद की प्रेमपीडा एक साथ विद्यमान है

(3)मीराबाई का शक्तिसंपन्न व्यक्तित्व मध्ययुगीन हिंदी भक्ति आंदोलन के जागारण पक्ष से संबद्ध है ।

(4) मीरा ने साहस के साथ अपने समय की राजशाही का चरित्र उजागर किया है

2 डा ओम आनंद सरस्वती

मीरा ने संगीत के माध्यम से कण्ठ और नृत्य के सहारे मधुरा-भक्ति का रूपायन किया है । उसके संकेत उसके काव्य में अभिधामूलक, लाक्षणिक तथा व्यंजन भाषिक स्वरूप से सबद्ध है ।

******

तनाव

मोहन, कनिष्ठ अनुवादक/डीजलशेड/ईरोड

तनाव किसी स्थिति के प्रति एक अंगीकृत प्रतिक्रिया है, जो किसी व्यक्ति की खुशहाली को खतरे में डाल सकता है या उसके प्रति चुनौती पैदा कर सकता है, जिसकी फलस्वरूप शारीरिक, मानसिक और भावात्मक 'बेचैनी' होती है। यह आंतरिक आक्रामक प्रतिक्रिया लंबे समय तक रहने से अंतत: शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य को खराब करती है। हर कोई समय-समय पर तनाव महसूस करता है और इस प्रतिस्पर्धात्मक जगत में यह जीवन के सभी क्षेत्रों और सभी आयु वर्ग के लोगों में विद्यमान है।

तनाव क्यों होता है?

जब हम किसी हमले की आशंका से अपने शरीर या मन पर कोई दबाव महसूस करते हैं, तो उससे एक प्रतिहिंसा की भावना पैदा होती है। इस प्रक्रिया के दौरान हमारे शरीर में हार्मोन्स और रसायनों का एक जटिल मिश्रण स्रवित होता है, जो हमें एक शारीरिक कार्रवाई के लिए तैयार करता है।

तनाव के कारक

तनाव के कारणों में कोई भी ऐसी पर्यावरणीय स्थिति शामिल हो सकती है, जो किसी व्यक्ति से भौतिक या भावात्मक मांग करती है। उदाहरण के लिए रोजगार असुरक्षा, कोई काम न होना या अत्यधिक काम होना, सूचना का अति प्रवाह, घरेलू दबाव, परिवार या सामाजिक अपेक्षाएं और तेज रफ्तार जिंदगी आदि बातें किसी भी व्यक्ति में तनाव का कारण बनती हैं।

तनाव के परिणाम

तनाव अपने को कई तरह से प्रदर्शित करता है। जब हम जीवन की स्थितियों के वशीभूत होकर अपने तनाव से मुक्त नहीं हो पाते, तो वह तब तक बढ़ता रहता है, जब तक हम विस्फोटित नहीं हो जाते अथवा टूट नहीं जाते। इससे शरीर और मस्तिष्क दोनों में खास तरह की विकृतियां आती हैं। तनाव बनने की प्रक्रिया का निदान शारीरिक लक्षणों से होता है, जैसे सरदर्द, मांसपेशीय तनाव, उच्च रक्तचाप, सीने में दर्द, पाचन संबंधी समस्याएं, भोजन संबंधी विकृतियां, अनिद्रा, अरुचि, थकान, बालों का गिरना आदि। तनाव के कारण मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी परिवर्तन भी होते हैं, जैसे गुस्सा, चिड़चिड़ापन, आत्मसम्मान में कमी,

घबराहट में हमले, मूड संबंधी फेरबदल, ऊंची आवाज में बोलना, विद्वेष, असहिष्णुता, नाराजग़ी, चिंता, अवसाद, अति मदिरापान, निराशा आदि।

तनाव को नियंत्रित कैसे करें?

तनाव प्रबंधन ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें 'तनाव से बचने और तनाव से निपटने के उपाय' शामिल होते हैं, ताकि रोजमर्रा की कार्य प्रणाली में सुधार के प्रयोजन के लिए बेहतर व्यवस्था कायम की जा सके। यह ऐसी योग्यता है, जो स्थितियों, लोगों और अत्यधिक मांग करने वाली घटनाओं को नियंत्रण में रखने में मदद करती है। तनाव प्रबंधन उस समय अनिवार्य हो जाता है, जब हमें यह प्रतीत होता है कि हम जीवन में दबावपूर्ण स्थितियों का सामना कर रहे हैं। तनाव प्रबंधन यह खोजने की प्रक्रिया है, कि हम यथासंभव तनाव से कैसे बच सकते हैं और अपरिहार्य तनाव होने पर उससे कैसे निपट सकते हैं।

तनाव प्रबंधन की विभिन्न तकनीकें

व्यायाम

कोई भी ऐसी शारीरिक क्रिया, जो हार्मोन को मुक्त करने में मददगार हो। इसे मनोविज्ञान की भाषा में मूड एलिवेटर और मानसिक दर्द निवारक भी कहा जाता है। इन व्यायामों में पैदल चलना, साइकलिंग, दौडऩा, जॉगिंग, तैरना आदि शामिल हैं, जो तनाव को विरेचित करने में मददगार होते हैं।

सांस पर ध्यान केन्द्रित करना

लंबी सांस लेने से फेफड़ों के पंजर की ओर विस्तार के जरिए पाश्र्ववर्ती की बजाए नीचे की ओर विस्तार के लिए जगह बनती है। इस तरह गहरे सांस की इस प्रक्रिया में सीने की बजाए पेट का विस्तार होता है। इसे आमतौर पर ऑक्सीजन ग्रहण करने का अधिक स्वस्थ और पूर्ण तरीका समझा जाता है और इसे अक्सर हाइपर वेंटिलेशन और तनाव के लिए एक उपचार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। तनाव और क्रोध के दौरान हमारी प्रवृत्ति सांस खींचने और उसे रोकने की रहती है। लंबी सांस लेने और छोडऩे से हमारा शरीर इस बात के लिए सतर्क हो जाता है कि वह आराम कर सकता है और आवश्यक शारीरिक कार्यो को अंजाम दे सकता है और संघर्ष या बेचैनी की स्थिति से उभर सकता है।

बॉडी स्कैन

इसके अंतर्गत गहरे सांस लेने की प्रक्रिया का इस्तेमाल मांसपेशियों को तनावमुक्त करने के लिए किया जाता है। कुछ मिनट तक लंबी सांस लेने के बाद हम एक समय में शरीर के एक हिस्से या मांसपेशियों के एक समूह पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वहां महसूस किए जा रहे किसी भी शारीरिक तनाव से मानसिक रूप में मुक्त होने का प्रयास करते हैं।

आत्म सम्मोहन: निर्देशित कल्पना

किसी शांत स्थान का चयन करें, जहां बैठ कर अभ्यास किया जा सके। आंखें बंद करें और मांसपेशियों को आराम पहुंचाने का प्रयास करें। शांतिदायक दृश्यों, स्थानों, अनुभवों को अपने मस्तिष्क में महसूस करें ताकि वहां ध्यान केंद्रित करके आप अपने को तनाव से मुक्त कर सकें। इससे आपकी रचनात्मक दृष्टि को सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी।

स्व-सृजित प्रशिक्षण:

यह भी एक तरह की तनावमुक्ति तकनीक है, जिसमें व्यक्ति मानसदर्शन औररचनात्मकताओं के जरिए स्थितियों के ऐसे समूह को दोहराता है, जो उसे मुक्ति की स्थिति की ओर प्रेरित करती हैं। यह तकनीक स्वायत्त मांसल प्रणाली की सहानुभूतिपूर्ण (फाइट या फ्लाइट मोड) और आराम और पाचन शाखाओं के बीच संतुलन बहाल करती है। ये शाखाएं किसी स्थिति के प्रति हमारी अनुक्रिया को नियंत्रित करती हैं।

शौक विकसित करना

अवकाश के दौरान किसी गतिविधि के प्रति अभिरुचि पैदा करके भी तनाव से मुक्त हुआ जा सकता है क्योंकि हमें एक प्राकृतिक बहिप्रवाह की आवश्यकता होती है, जिसमें हमारा ध्यान जो कार्य नहीं हुए हैं और जो हमें करने की आवश्यकता है, उनकी बजाए उन कार्यों पर केंद्रित रहता है, जिनमें हमें आनंद आता है।

ध्यान (मेडिटेशन)

यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अन्य सभी वस्तुओं, विचारों और परिकल्पनाओं को मस्तिष्क से निकाल कर किसी एक वस्तु या विचार पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता है। ये ध्यान बिंदु कोई मंत्र उच्चारण अथवा स्वयं का श्वास या 'ओम' जैसा कोई पवित्र शब्द हो सकता है। इस तरह ध्यान केंद्रित करने से शरीर और मन को आराम मिलता है।

पुनरावर्तक प्रार्थना

दिन में पांच से बीस मिनट तक किसी लघु प्रार्थना अथवा प्रार्थना के किसी वाक्यांश की मौन पुनरावृत्ति करने और साथ में गहरे सांस का अभ्यास करने से मस्तिष्क को शांति और तनाव से मुक्ति मिलती है।

संगीत

संगीत सुनने से हमारे मस्तिष्क और शरीर को अच्छा लगता है और हमें अपेक्षित कार्यों पर बेहतर ढंग से ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। संगीत तनाव मुक्त करने वाले सबसे उपयुक्त उपायों में से एक है। जब हम संगीत सुनते हैं, तो हमारे शरीर में सेरोटोनिन (एक न्यूरो ट्रांसमीटर, जो व्यक्ति की खुशहाली बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होता है) की मात्रा बढ़ जाती है। दंत्य और शल्य क्रिया के दौरान संगीत सुनने से आदमी का दर्द और तनाव कम होता है।

योग निद्रा

यह सोने और जागने के बीच चेतना की एक स्थिति है। इसमें निद्रा और योग का मिश्रण होता है और यह सोने जाने जैसी स्थिति होती है। इसमें हम मौखिक अनुदेशों के एक समूह का अनुपालन करते हुए अंतर-जगत के प्रति सिलसिलेवार और सतत जागरूक रहते हैं। इससे हमें घोर तनाव के लक्षणों, जैसे चिंता, अवसाद, सीने में दर्द,

धडक़न तेज होने और पसीना आने जैसी स्थितियों से तत्काल राहत मिलती है। योग निद्रा का इस्तेमाल अभिघात परवर्ती विकृतियों से निपटने वाले सैनिकों द्वारा कारगर ढंग से किया जाता है।

निष्कर्ष

जब हमें तनाव का सामना करना पड़ता है, तो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यावधान आता है और हम संकटग्रस्त महसूस करते हैं, परंतु सभी प्रकार का तनावखराब नहीं होता। तनाव का एक रचनात्मक पक्ष भी है, जिसे 'यूस्ट्रेस' कहा जाता है। इसका अर्थ है, सुधार लाने के लिए तनाव महसूस करना। लोगों को उनके लक्ष्य हासिल करने के लिए सक्रिय और प्रेरित करने, उनके माहौल को बदलने और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सफल बनाने तथा उन्हें अधिक उत्पादक बनने में मदद पहुंचाने के लिए भी कुछ तनाव आवश्यक होता है। हमें यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि हम तनाव से लडने में अकेले नहीं हैं और यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका समाधान न किया जा सके। इसलिए परेशान न हों। खुश रहें। सब सही है और सही रहेगा। इन सरल पंक्तियों के साथ भी कभी-कभी हम आश्चर्यजनक ढंग से तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

अमित कुमार
कनिष्ठ इंजीनियर, संकर्म / सेलम

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

रूपा मंडल, कनिष्ठ अनुवादक

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा उसकी संपर्क - भाषा ही होती है। वह राष्ट्र की एकता का प्रतीक होती है। उसमे राष्ट्र की आत्मा गूँजती है। राष्ट्रभाषा या संपर्क – भाषा की उपेक्षा राष्ट्र की उपेक्षा है। यह विभिन्न भाषा-भाषी और भिन्न-भिन्न संप्रदायों के लोगों को मिलाती है। जब विभिन्न भाषा-भाषी एक दूसरें से मिलते है और अपने विचारों को व्यक्त करते है तो एक दूसरें के विचारों को समझ नहीं सकते हैं तो उनका मिलना व्यर्थ हो जाता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में अगर विचारों का अदान-प्रदान न हो तो हमारा जीवन व्यर्थ है। भाषा की दीवार बहुत बड़ी दीवार होती है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में संपर्क –भाषा के बिना अन्य प्रांतों में जाकर जीवन निर्वाह करना बहुत ही मुश्किल कार्य है। इसे आसान बनाने का साधन एक मात्र संपर्क भाषा ही है।हिंदी को संपर्क भाषा कहने से पहले संपर्क भाषा का अर्थ समझना अवश्यक हो जाता है तो आइए हम जाने की संपर्क भाषा का मतलब क्या होता है। हम संपर्क भाषा की परिभाषा इस प्रकार दे सकते है -उस भाषाको संपर्क भाषा कहते हैं जो किसी क्षेत्र में सामान्य रूप से किसी भी दो ऐसे व्यक्तियों के बीच प्रयोग हो जिनकी मातृभाषाएँअलग हैं। संपर्क भाषा का अर्थ है 'सामान्य बोली या 'लोक बोली। इस संबंध में अनेकों भाषा- वैज्ञानिकों ने अपने – अपने विचार रखे हैं - इस क्रम में **डॉ. दंगल झाल्टे द्वारा प्रतिपादित परिभाषा उल्लेखनीय है- 'अनेक भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य, राज्य-केंद्र तथा देश-विदेश के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है, उसे सम्पर्क भाषा (Contact or Inter Language) की संज्ञा दी जा सकती है।'(-प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग, पृ. 53) । डॉ. महेन्द्र सिंह राणा ने सम्पर्क भाषा को इन शब्दों में परिभाषित किया है : 'परस्पर अबोधगम्य भाषा या भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से दो व्यक्ति, दो राज्य, कोई राज्य और केंद्र तथा दो देश सम्पर्क स्थापित कर पाते हैं, उस भाषा विशेष को सम्पर्क भाषा या सम्पर्क साधक भाषा (Contact Language or Interlink Language) कहा जा सकता है।'(-प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम, पृ. 79)।**

आजादी की लड़ाई लड़ते समय हमारी यह कामना थी कि स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होगी जिससे देश एकता के सूत्र में सदा के लिए जुड़ा रहेगा। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि सभी महापुरुषों ने एक मत से हिंदी का समर्थन किया, क्योंकि हिंदी हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आन्दोलनों की ही नहीं अपितु राष्ट्रीय चेतना एवं स्वाधीनता आन्दोलन की अभिव्यक्ति की भाषा भी रही है।सम्पर्क भाषा हिंदी का आयाम, जनभाषा हिंदी, सबसे व्यापक और लोकप्रिय है जिसका प्रसार क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर से बढ़कर भारतीय उपमहाद्वीप तक है। शिक्षित, अर्धशिक्षित, अशिक्षित, तीनों वर्गों के लोग

परस्पर बातचीत आदि के लिए जनभाषा हिंदी का व्यवहार करते हैं।भाषा की विविधता जिस तरह से भारत में दृष्टिगोचर होती है ऐसा किसी और देश में नहीं है। ऐसी अवस्था में संपर्क भाषा की नितांत आवश्यकता है। भारत के आज की राजनीतिक एवं सामाजिक सन्दर्भ में किसी एक भारतीय भाषा का संपर्क भाषा के रूप में उभरना सरल नहीं है। हिंदी, ही इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त है जो कि एक राष्ट्रीय एवं कार्यकारणी भाषा के रूप में संवैधानिक तौर पर प्रतिष्ठित है।

हिंदी अपने राष्ट्रीय स्वरूप में ही पूरे देश की संपर्क भाषा बनी हुई है। भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के मध्य परस्पर विचार-विनिमय का माध्यम बनने वाली भाषा को संपर्क भाषा कहा जाता है। यधपि अंग्रेजी भाषा भारत में सह-राजभाषा के रूप में स्वीकृत है तथापि विश्व के अनेक देशों में वह संपर्क भाषा बनी हुई है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में अधिक संख्या में बोली और समझी जाने वाली राष्ट्रभाषा हिंदी है जो संपर्क भाषा का कार्य करती है। भारत में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में सिद्ध भाषाओं की एक अटूट -सी श्रृंखला है। वह सरकार की राजभाषा भी है तथा सारे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली संपर्क भाषा भी है। इस तरह अपने तीनों रूपों-राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा-में हिंदी भाषा अपना दायित्व सहजता से निभा रही है क्योंकि इन तीनों में अन्त:संबंध हैं। 'राष्ट्रभाषा सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वीकृत भाषा होती है जबकि प्रशासनिक कार्यों के व्यवहारों में प्रयुक्त होने वाली 'राजभाषा घोषित की जाती है तथा संपर्क भाषा का विकास प्रांतिक और स्वैचिछक आधार पर होता है जो सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। संपर्क भाषा ही सर्व-स्वीकृत होकर राष्ट्रभाषा बनती है। समृद्ध देशों में राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में एक ही भाषा का प्रयोग होता है, जैसे जापान, अमेरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देश। इस दृष्टि से भारतवर्ष भी समृद्ध देश है जहाँ हिंदी ही अपने तीनों रूपों में प्रयुक्त होती है। हिंदी ही राष्ट्रभाषा भी है और राजभाषा भी तथा संपर्क भाषा भी। विश्व के अनेक देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। हिंदी की गुणवत्ता का अनुभव सभी शिक्षाविदों, विद्वानों, लेखकों और सहृदय सामाजिकों ने किया है। आज अंग्रेजी संपर्क भाषा के रूप में शिक्षित नागरिक तबकों में दो प्रतिशत दिखाई देता है लेकिन ठेठ ग्रामीण अंचलों में जहां वे अपनी-अपनी भाषा बोलते है जैसे तमिल, उड़िया और बँगला भाषाएं ही चलती है, अंग्रेजी नहीं। आधे देश के हिंदी भाषी ग्रामीण जब उनके प्रदेशों में जाएंगे तो उनके संपर्क से वे हिंदी जल्दी अपनाएंगें। अंग्रेजी का प्रचलन धीरे-धीरे नाम मात्र का होता जाएगा।

धार्मिक स्थानों और तीर्थ स्थानों की भाषा हिंदी ही है। उज्जैन, इलाहाबाद और हरिद्वारा आदि जैसे तीर्थ स्थानों पर आने वाले लाखों श्रद्धालु भारत के विभिन्न राज्यों से आते है जो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी होते है तो भाषा का आदान –प्रदान स्वभाविक बन जाता है । ऐसी परिस्थिति एक दूसरें से संपर्क – भाषा हिंदी ही होती है । बंगाल, काश्मीर, केरल, तमिलनाडु आदि प्रदेशों के लोग हिंदी भाषा को ही बातचीत का माध्यम बना लेते है। उड़ीसा में पूरी के रथ- यात्रा मेले में अपार जन-समुदाय विभिन्न प्रदेशों से आकर हिंदी का ही प्रयोग करते है। अंग्रेजी से इन लाखों भक्तों का काम नहीं चलता। इसी प्रकार तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, बंगलादेश

और पाकिस्तान के मुस्लिम जब दरगाह-ए-शरीफ अजमेर में मिलते है तो हिंदी की दूसरी शैली हिंदुस्तानी में ही बातचीत करते है। इसी प्रकार विभिन्न हिंदीत्तर – भाषी नगरों के यात्री जब रेलों में आपस में मिलते है तो हिंदी माध्यम से ही अपना काम निकालते है। अत: एकमात्र हिंदी ही सर्वप्रिय संपर्क –भाषा है। शिलांग पूर्वी भारत का एक प्रमुख नगर है । यहां अनेक विविधताओं में एकता का एक प्रमुख कारण एकमात्र संपर्क –भाषा हिंदी ही है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह को लघु भारत का नाम दिया गया है जहां विभिन्न राज्यों के लोग निवास करते हैं जिनकी संपर्क भाषा हिंदी ही है । यहां तक कि वे अपने बच्चों को हिंदी भाषा बड़े ही गर्व से पढाते है।

उन क्षेत्रों या राज्यों में जहां हिंदी के प्रवेश की कल्पना 40 वर्ष पूर्व नहीं हो सकती थी आज हिंदी पहुँच गई है । खेलों की कमेंटरी अब हिंदी में होने लगी है, हिंदी के टेलीप्रिंटर देश भर में समाचार हिंदी में भेजते है, कंप्यूटरों में हिंदी फॉन्ट उपलब्ध है और हिंदीत्तर प्रदेशों में अब हिंदी सिखाई जा रही है। हिंदी पत्र – पत्रिकाओं की पाठक संख्या में काफी वृद्धि हुई है। हिंदी फिल्मों ने इसे देश के कोने-कोने में यहां तक कि विदेशों में भी लोकप्रिय बना दिया है। प्राय: कहा जाता है कि हिंदी को भारत के संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में इसलिए स्वीकार किया गया है कि हिंदी भारत के अधिकांश निवासियों की मातृ भाषा है। आज भी जब हिंदी के पक्ष में तर्क दिए जाते हैं तो उनमे से एक बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि हिंदी भारत के बहुमत की भाषा है जहां यह तर्क सही है वहां इस तर्क से यह मिथ्या धारणा भी सामने आती है कि भारत का अल्पमत हिंदी नहीं जानता? जबकी यह सत्य नहीं है, हिंदी न केवल हिंदी भाषियों की संपर्क भाषा है बल्कि यह हिंदीत्तर- भाषियों की भी एकमात्र संपर्क भाषा है। देश को भावनात्मक एकता में बांधने और जनमानस में आत्मसम्मान तथा आत्मनिर्भरता की भावना जागृत करने में हिंदी की भूमिका सराहनीय है। इसने सदियों से सांस्कृतिक और धार्मिक समन्वय के लिए जोड़–भाषा के रूप में तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, मराठी, पंजाबी, असमिया, उड़िया, बंगला, हिंदी, नेपाली आदि विभिन्न भाषा–भाषियों को एकसूत्रता प्रदान करने का प्रयत्न किया है। संस्कृत के बाद हिंदी ने ही पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण के धार्मिक तथा सांस्कृतिक केंद्रों, धामों, मन्दिरों, मठों को जोड़ने तथा कला–कौशल, स्थापत्य, चित्र एवं मूर्ति आदि कलाओं से परिचित करवाने और विभिन्न जीवन–शैलियों, विचारों एवं चिन्तनों को एक–दूसरे तक पहुँचाने में भाषिक मदद की है। संतों, भक्तों, आचार्यों की समृद्ध मध्यकालीन परंपरा की गतिशीलता एवं जनता–जनार्दन तक उनकी पहुँच में हिंदी की सहायता की कोई बराबरी नहीं है। तत्व चिंतकों, मनीषियों, उपदेशकों ने इसे दुलारा है तो आम जनता ने हृदय से अपनाया है। अपने वैशिष्ट्य के कारण ही यह वद्रिकाश्रम से रामेश्वरम् तक और दक्षिण के भक्त आचार्यों की वाणी की शोभा बनकर दक्षिण से उत्तर तक सबको जोड़ती रही है। दिल्ली और आगरा के व्यापारियों के साथ सुदूर पूर्वोत्तर और दक्षिण राज्यों एवं महानगरों तक पहुँचकर व्यापार की भाषा बनी है। सर्वग्राह्यता के गुण ने

हिंदी को जाति, धर्म और प्रान्त से ऊपर उठाकर संपर्क भाषा के आसन पर विराजमान किया है। इसमें इसका लचीला स्वरूप काफी सहायक रहा है।

भारत के संविधान में राजभाषा का कार्य तथा संपर्क भाषा का कार्य भाषा की उपयोगिता पर निर्भर करता है जैसे भारत की पराधीनत काल की शासन व्यवस्था में राजभाषा के रूप में फारसी, उर्दू तथा अंग्रेजी का अधिपत्य रहने पर भी भारतीय जन-मानस की पारस्परिक विचार - विनिमय की संपर्क भाषा हिंदी ही रही है। उस समय हिंदी अपनी उपयोगिता के आधार पर राजभाषा न होने पर भी पूरे भारतवर्ष में जन-संपर्क की एक समान भाषा के रूप में सहज रूप से प्रचलित होती गई। जिसकी चरम सीमा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दिखलाई पड़ी थी। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारत के संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी है। संघ की राजभाषा से तात्पर्य विधानांग, कायांग और न्यायांग- तीनों के कार्य-कलापों से है। 1952 से लेकर 1961 तक राजकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए राष्ट्रपति के तीन आदेश निकले। सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बना और सन् 1967 में इसमें संशोधन हुआ। इसके अनुसार संधीय कार्यों के लिए द्विभाषिक स्थिति अपनाई गई, अर्थात हिंदी ने राजभाषा का स्थान ग्रहण किया और अंग्रेजी का अनिश्चित काल तक सह भाषा के रूप में प्रचलित रहने के बारे में निर्णय लिया गया। तब से लेकर अब तक केंद्रीय सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों ने समय- समय पर कितने ही आदेश-अनुदेश निकाले है, जिनके अनुसार अब प्रशासन का शायद ही कोई क्षेत्र हिंदी प्रयोग से अछुता रहा हो।

अनेक योजनाओं और प्रोत्साहनों के बावजूद आज के भारतीय समाज में प्रादेशिक भाषाओं और हिंदी के प्रति न तो अपेक्षित उत्साह है और न ही उतनी कर्मठता देखने को मिली जो उसे अंग्रेजी के समकक्ष प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ा कर सके क्योंकि समाज का एक वर्ग पढ़े-लिखों का है जिनके बीच अंग्रेजी का व्यापक व्यवहार हो रहा है और केंद्रीय शासन के स्तर पर शिक्षा, विज्ञान और टेकनलॉजी तथा अंतर्प्रांतीय वैचारिक आदान-प्रदान के स्तर पर अंग्रेजी भारतीय जनतंत्र में सर्वोच्च और शक्तिशाली वर्ग की भाषा बनी हुई है । संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को मिली मान्यता कागजों पर है, उसका कार्यान्वयन कुछ ही अंशों में हो पाया है क्योंकि अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी गई है जिसके कारण केंद्र में द्विभाषी नीति चल रही है। यह नीति बहुत हद तक कार्यान्वित भी हो रही है (जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज द्विभाषी में जारी हो रहे है, संसद की अधिकृत कार्रवाई दोनों भाषाओं में जारी होती है आदि) और कार्यन्वयन के लिए मशीनरी भी स्थापित हुई है जैसे मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियां है , हिंदी अधिकारी है और हिंदी नीति की देख-रेख राजभाषा विभाग करता है । यह बहुत संतोष की बात है कि इस नीति के कार्यान्वयन के लिए यह मशीनरी काम कर रही है ताकि हिंदी पिछड़ न जाए। फिर भी ऐसा लगता नहीं है कि हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले लेगी। वह बढ़ती तो रहेगी जैसा कि अब तक बढ़ती आ रही है पर जब तक अंग्रेजी का स्थान लेने की कोई प्रक्रिया उसे नहीं दी जाती तब तक वह कभी भी देश की एकमात्र राजभाषा बन जाएं ऐसा नहीं लगता। केंद्र सरकार की राजभाषा योजनाएं अन्य संस्थाओं के हिंदी प्रचार संबंधी प्रयास, शिक्षातंत्र में यथाशक्ति त्रिभाषा फार्मूला हिंदी को राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने में लगे हुए है किंतु प्रगति अपेक्षा से बहुत धीमी है। देश का सामूहिक नेतृत्व जब एक स्तर से पूर्ण निष्ठा के साथ हिंदी के प्रयोग को बल देगा तभी स्थिति में तेजी आएगी।विश्वविद्यालयों के अध्यापक, देश के

इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर आदि जब हिंदी को अपनाएंगें तो व्यपार उद्योग के क्षेत्र पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा और समूचे देश में हिंदी का एक वातावरण तैयार होगा। भारत की शिक्षा योजना में विशेषकर उच्च शिक्षा योजना में प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम बनाने का परिणाम यह होगा कि हिंदीत्तर प्रदेशों के डॉक्टरों, इंजीनियरों आदि को प्रादेशिक, हिंदी भाषा का ज्ञान होगा।

हिंदी भाषा को सर्वमान्य बनाने के लिए सरकार तथा समाज को कई गंभीर कदम उठाने होंगे। सर्वप्रथम इस विषय पर सार्वजानिक रूप से बौद्धिक चर्चाएं होनी चाहिए जिसमें हर वर्ग के लोगों को सम्मिलित करना होगा। चूँकि हिंदी भाषा का विकास पहले से संघर्षमय परिस्थितियों में हुआ है, इसलिए इसमें परिस्थितियों के अनुकूलन की क्षमता अन्तर्निहित है। इस तरह हिंदी में हिदुस्तानी भाषाओं से सम्बंधित भाषाओं के शब्दों एवं विचारों को समाहित करने की व्यवस्था पहले से ही विकसित है। दूसरी बात जो कि ज्यादा जोर देने की है, वह यह कि हिंदी भाषा को ज्ञान, विज्ञान, तथा व्यवसाय की औपचारिक भाषा बनाना होगा। यह क्षमता भी हिंदी में इसके संस्कृत निष्ठ होने के कारण निहित है। अंततः हिंदी को संपर्क भाषा बनाने के लिए इसका वैश्वीकरण करना होगा जिससे यह प्रतिस्पर्धात्मक चरण से उठकर सार्वभौमिक रूप में स्वीकारणीय हो सके। इसके लिए भारतीय परम्परागत जीवन के सारभूतों को विश्व के समक्ष हिंदी के माध्यम से रखना होगा। आज के बुद्धिजीवी लोगों को यह सोचना चाहिए कि क्या सदा के लिए इस देश में आपस के संपर्क की भाषा एक विदेशी भाषा ही रहेगी? अगर हिंदीत्तर-भाषी प्रदेश त्रिभाषा सूत्र को नकार कर केवल अपनी भाषा और अंग्रेजी भाषाएं ही अपने बच्चों को सिखाएंगें तो हिंदी-भाषी प्रदेश क्यों न कहेंगे कि वे अपने बच्चों को तीसरीं भाषा क्यों सिखाएं? अत: इस तनाव में हिंदी की संपर्क भाषा –भूमिका समाप्त हो जाएगी। आज अंग्रेजी को संपर्क भाषा –भूमिका हिंदीत्तर भाषी प्रदेशों को भा रही है इसके पीछे कारण यह है कि उत्तर के कुछ प्रदेशों की मातृभाषा को हम सबकी संपर्क भाषा क्यों माने? हमारी अन्य भाषाएं क्या कम है ? उस समय हम यह भूल जाते है कि हिंदी किसी की मातृभाषा उन अर्थों में नहीं है क्योंकि अवधी, भोजपूरी, राजस्थानी, मगही, बुंदेलखंडी, मारवाड़ी आदि उनके मातृभाषा होते हुए भी संस्कृतनिष्ठ हिंदी ही उनकी संपर्क-भाषा की भूमिका को चरितार्थ करती है।

किसी राष्ट्रीय संघर्ष की भावना पैदा किए बिना हिंदी प्रेमी तथा हिंदी प्रचारकों का परम कर्तव्य बन जाता है कि हिंदी प्रचार –प्रसार के कार्य में हमेशा हिंदी का ही प्रयोग करें। “ Charity begins at home “ के सिद्धांत को अपनाकर हिंदी के प्रयोग को निष्ठा के साथ करें। हम हिंदी भाषा- भाषियों को इस पर भी विचार करना होगा कि हिंदी पर केवल हिंदी - भाषियों का ही अधिकार नहीं है, वह समूचे देश की भाषा है इस पर समान रूप से सभी का हक है । हिंदीत्तर –भाषियों से संपर्क करते समय हिंदी – भाषियों को हिंदी में बात करनी चाहिए ताकि उनके कान हिंदी भाषा सुनने के आदि बन सके और उनका संकोच दूर हो सके। हिंदी के संकोच रहित व्यवहार से वह अपने आयाम तक पहुँच सकेगी। भारत के प्रत्येक व्यक्ति के लिए यदि कोई परस्पर संपर्क की भाषा है, तो वह केवल हिंदी ही है चाहे वह किसी भी भाषाई क्षेत्र का हो। हिंदी के इसी सार्वदेशिक चरित्र को जब प्रचारक बंधु सभी के समक्ष रखेगें तभी संपूर्ण भारत एकता के सूत्र में पिरोया जा सकेगा। इसके

बाद हम क्षेत्रों के आधार पर नहीं, बल्कि एक भारतीय के नाते परस्पर प्रेम एवं सद्भाव से एक दूसरें से मिल सकेंगे।

जिस दिन हिंदी उच्च प्रशासकों की ऊँची अट्टालिकाएं, बड़े-बड़े वाणिज्यिक संस्थानों और पब्लिक स्कूलों में प्रतिष्ठित हो जाएगी तब उसका सिंघासन सुरक्षित हो जाएगा। केंद्रीय प्रशासनिक प्रतियोगिता परिक्षाओं में इसका प्रवेश इस दिशा में पहला कदम है। हमें विश्वास है कि हिंदी-भाषी और हिंदीत्तर-भाषी इस विषय में गंभीरता से मनन करेंगे और राष्ट्रभाषा हिंदी को अविलंब अपने व्यवहार की भाषा बनाएंगे । विनोबा भावे ने कहा था- " जैसे इन्द्र - धनुष में भिन्न-भिन्न रंग होते है वैसे ही हिंदुस्तान में भिन्न-भिन्न भाषाएँ है । भारत के लोगों को दो-तीन भाषाओं का ज्ञान होना ही चाहिए । इससे खूब ज्ञान मिलेगा, बुद्धी व्यापक होगी, एक – दूसरें की भाषा सिखने से प्रेम बढ़ेगा, व्यवहार सुगम होगा और हिंदुस्तान की ताकत बढ़ेगी।"

****

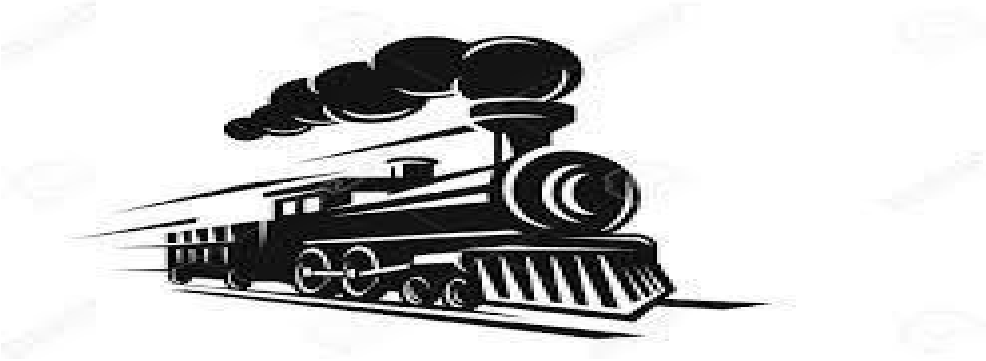

दशरथ मांझी –एक प्रेरणा स्त्रोत

अमित कुमार
कनिष्ठ इंजीनियर, संकर्म / सेलम

वैसे तो बिहार की धरती ने अनगिनत लाल दिए है इनमें राजा जनक, माता सीता, सम्राट अशोक से लेकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, फणीश्वरनाथ रेणु तक और भी अनगिनत नाम है । इसमे एक नाम दशरथ मांझी का भी आता है। दशरथ मांझी जिसे आप एक सनकी भी कह सकते हैं। एक ऐसी सनक जो समाज और देश के काम आया और गांव की तरक्की का कारण बन गया । ऐसे ही एक आदमी कहानी नायक का नाम है दशरथ मांझी जिसने पहाड़ का सीना चीर कर रास्ता बना दिया । लोग मजनु, फरहाद, रांझा और रोमियों के नाम को तो प्रेम के प्रतीक के रूप में जानते ही है मगर इन नामों से अलग दशरथ मांझी का नाम वर्षों गुमनामी में पड़ा रहा जो शायद उसके दलित होने के कारण हुआ। दशरथ मांझी की पत्नि फाल्गुनी देवी (फगुनिया) का निधन इलाज में देरी के कारण हो गया। मांझी जो अपनी पत्नि से बहुत प्यार करता था। उसकी मौत से वो इतना आहत हुआ कि ऐसा फिर किसी के साथ न हो उसके लिए उसने अकेले एक छेनी-हथौड़ी के सहारे बिना किसी के मदद के 360 फुट लंबा, 30 फुट चौड़ा और 25 फुट ऊंचे पहाड़ को काट कर एक नया रास्ता बना दिया। जिसमें उसने अपने जीवन का 22 साल (वर्ष 1960-1982) लगा दिया।

दशरथ मांझी का जन्म 14 जनवरी 1929 को गहलौर बिहार में हुआ था। इन्होने अपने काम से 22 वर्ष में गया के अतरी और वजीरगंज की दूरी को 55 किमी से घटाकर 15 किमी कर दिया। शुरूआत में लोगों ने उसे पागल करार दिया मगर जो कर्मयोगी होते है वो लोगों के कहने पर कब ध्यान देते है। वर्तमान में मांझी अभी चर्चा में आए है और नई पीढी को इनके बारे में जानने का अवसर मिला है। इसके लिए भारतीय सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान है। उनके जीवन पर आधारित कुछ फिल्मों में मुख्य है-

1) द मैन हु मुव्ड द माउंटेन-2012
2) द माउंटेन मैन-मांझी 2015 – इस फिल्म को बनाने का विशेषाधिकार खुद मांझी ने अपनी मृत्यु पर दिया था।जिसके मुख्य कलाकार नवाजुद्दीन सिद्दीकी है।
3) ओलवे मंदार (OLAVE MANDARA) में मंझी के काम को दिखाया गया है।

4) 2014 में टी.वी. शो सत्यमेव जयते -2 का पहला एपीसोड दशरथ मांझी को समर्पित था।

दशरथ मांझी का निधन 63 वर्ष की अवश्था में 17 अगस्त 2006 को पित्ताशय (गॉल ब्लैडर) में कैंसर की वजह से हो गया। बाद में बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार ने गहलौर में उनके नाम पर 3 किमी लंबी एक सड़क और हास्पिटल बनाने का फैसला किया। मुझे गर्व है मैं दशरथ मांझी के धरती बिहार से हूँ।

मुझे शाहजहाँ के ताजमहल बनवाने से दशरथ मांझी का पहाड़ तोड़ कर रास्ता बनाना मोहबत का प्रतीक लगता है। दशरथ मांझी के नाम पर 2016 में भारत सरकार ने एक जारी कर उन्हें सम्मानित किया। फिल्म मांझी द माउंटेन मैन में उनके वक्तव्य उनकी मां के द्वारा दिए शिक्षा के बारे में बताता है। इससे एक बार और यह साबित होता है कि हर पुरुष की सफलता में किसी न किसी नारी का योगदान होता है।

"अपने बुलंद हौसलों और खुद को जो कुछ आता था , उसी के दम पर मैं मेहनत करता रहा। संघर्ष के दिनों में मेरी माँ कहा करती थी कि 12 साल में तो घूरे में दिन फीट जाते है। उनका यही मंत्र कि अपने धुन में लगे रहो। बस मैंने भी यही मंत्र जीवन में बांध रखा था कि अपना काम करते रहो , चीज़ें मिले, न मिलें इसकी परवाह मत करो, हर रात के बाद दिन तो आता ही है। "उपरोक्त लाइन यह बताती है कि जीवन में उनकी लगन के पीछे उनकी माँ की कही बातों का भी असर था। वैसे उनकी इस उपलब्धि के पीछे लोग उनका पत्नी के प्रति प्यार को ही महत्व देते है मगर इस वक्तव्य से यह साध होता है कि पत्नी के प्रति प्यार और माँ की दी हुई शिक्षा के सहारे एक आदमी 22 वर्ष लगातार बिना रुके काम करते हुए 360 फुट लंहा रास्ता बना दिया।

दशरथ मांझी के जावन में एक और नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता है , वह है शिवु मिस्त्री। 22 वर्षों तक उन्हें हैमर मैन शिवु मिस्त्री ने निःशुल्क हथौडा पहाड़ तोडने के लिए प्रदान किए। उन्हीं के दिए छेनीहथौडे से दशरथ मांझी ने पहाड़ काटकर रास्ता बनाया। श्री मिस्त्री ने मांझी के कार्य में जान फूंकी थी। उनके इस योगदान को मांझी ने जीवन भर नम आरबे से याद रखा और उनके प्रति कृतज्ञ रहे।

पहाड़ यह एक शब्द ही नहीं है यह अपने आप में असीमित, अपरिमित और असंभव शब्द का पर्याय है जैसे उसके ऊपर तो दुःखओं का पहाड़ है। उसपर तो पहाड़ टूट पड़ा। यह काम करना पहाड़ तोड़ने के बराबर है। एक-एक दिन पहाड़ लगना। यहां बैठ कर क्या पहाड़ तोड़ रहे हो। अक्ल पर पत्थर पड़ना। पहाड़ से टक्कर इत्यादी। मगर मांझी ने अपनी पत्नी की मौत का बदला इल पहाड़ से लेने की ठानी क्योंकि उनकी पत्नी की मौत रास्ते के अभाव से हुई। अस्पताल जाने के लिए पहाड़ को पार करना पडता था अपने इरादा की वजह से उसने 22 वर्ष की कठिन परिश्रम के बाद पहाड़ को काट कर रास्ता बना दिया और यह कहे हार कर पहाड़ ने रास्ता दे दिया।

****

अपनी जुबानी, डीजल शेड की कहानी

लोकेश कुमार मीना
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/ डीजल लोको शेड

सुनो सुनाऊ डीजल शेड की कहानी।

डीजल शेड के कर्मियो की जुबानी।।

तीन शिफ्ट मैं होता है काम,

ए बी सी हैं इनके नाम।

जनरल का दिन है और

तीनों का तीन प्रहर है काम।

जब-जब इनका आता आराम,

आर जी शिफ्ट करती है काम।।

इसके डीजल के इंजन की बात निराली है।

चलने के इसके सदा, रहती यहां ख़ुशहाली है।।

चौबीसों घंटे करता है काम।

कभी न रुकना उसका नाम।।

हरदम इसको चलते रहना मंजिल पर पहुचाते रहना।

कभी न रुकना कभी न थकना, वजन हमेशा ढोते रहना।।

जब तक चलता इसका चक्का, सबके मन में है आराम।

जब जब संदेश आता है, दम हमारा घुट जाता है।

निष्पादन होने पर ही जान में जान आता है।।

विफल अगर ये हो जाता है,

हाहाकर मचा देता है।

खुद का समय खोने पर भी ये,

विलम्ब औरो को करा देता है।

प्रधान कार्यालय ओर मंडल में, ये हड़कंप मचा देता है।

डीजल शेड में सबसे पहले, अपना परिणाम दिखा देता है।

नीचे से ऊपर तक के, सभी कर्मियो को डरा देता है।

जिम्मेदारी में लापरवाही इसको नही बर्दाश्त है।

लापरवाह कर्मी चार्जशीट से परास्त है।।

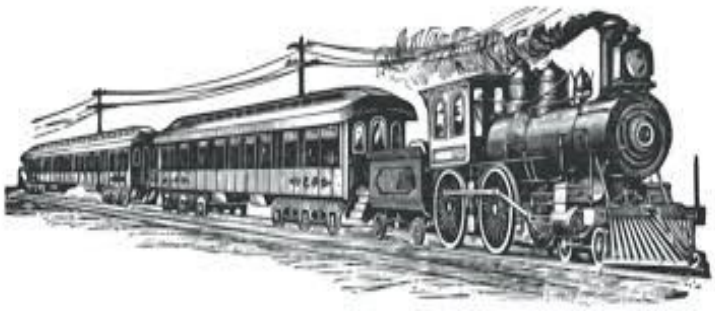

तमिलनाडु तथा हिंदी प्रचार कार्य

निमिता के.वी, कनिष्ठ अनुवादक

तमिल को छोडकर शेष भारतीय भाषाओं में “क, च, ट, त, प” के चार तरह के उच्चारणों के लिए चार अलग-अलग वर्ण हैं। केवल तमिल में इन चारों के लिए एक ही अक्षर है। दक्षिण भारत की भाषाओं की तुलना में तमिल में कम संस्कृत शब्द पाए जाते हैं। तमिल के पंडित शुद्ध तमिल के प्रयोग पर जोर डालते थे। उनका विश्वास था कि हिंदी सीखने से कई हिंदी शब्द तमिल में आ जाएंगे तथा बोलचाल की भाषा में वे शब्द प्रचलित हो जाएंगे। इससे मूल तमिल भाषा का रूप बिगड जाएगा। अतः वर्तमान तमिलनाडु प्रांत हिंदी प्रचार के लिए शुरू से चुनौतीपूर्ण रहा। परंतु राष्ट्रीयता के कारण हिंदी का प्रचार धीरे-धीरे होने लगा।

तमिलनाडु में हिंदी का प्रचार करने के लिए उत्तर से चार प्रचारक यहाँ आए थें –

1) स्व. प्रताप नारायण वाजपेय
2) रघुवर दयालु मिश्र
3) पंडित आवधनंदन
4) रामभरोसे श्रीवास्तव
5) क्षेमाचन्द राहत
6) देवदूत विद्यार्थी

तमिलनाडु में प्रथम प्रचारक विद्यालय:- तमिलनाडु के भिन्न-भिन्न शहरों में हिंदी प्रचार का काम करने हेतु, सफल प्रचारकों को तैयार करने के लिए ईरोड में सन् 1922, मई महीने में स्व. ई.वी. रामस्वामी नायक्कर के भवन में यह विद्यालय चलाया गया। पंडित मोतीलाल नेहरू के कर कमलों से इस विद्यालय का शुभारंभ हुआ। करीब पन्द्रह देशप्रेमी लोगों ने वहां शिक्षा पाई। एक वर्ष तक यह विद्यालय चला।

<u>विभिन्न केन्द्रों में हिंदी प्रचार:-</u> सेलम निवासियों को हिंदी के प्रथम प्रचारक श्री देवदास गाँधी से हिंदी सीखने का मौका चन्द महीनों तक मिला।

सन् 1931 में तिरुनेलवेली में हिंदी का प्रचार करने श्री नामेश्वर मिश्र गये। वे इसके पहले तीन साल तक मदुरै में हिंदी का प्रचार कार्य कर रहे थे। आपके आगमन से पहले तिरुनेलवेली में हिंदी की पढ़ाई हो रही थी। एक परिश्रमी युवक, उसका नाम था कालिदास राठौर, केरल के कायंकुलम से आकर हिंदी प्रचार के कार्य में लगे रहे थें।

मुत्तैया दास नामक हिंदी प्रचारक सन् 1922 में ईरोड के प्रचारक विद्यालय में प्रशिक्षण पाकर तूत्तुक्कुडी में हिंदी प्रचार के काम में लग गए। अध्यापक, वकील, व्यापारी आदि सब तरह के लोग चाव से उसके यहां हिंदी सीखते थें। वे आजीवन हिंदी के प्रचार में ही लगे रहे थे।

उपरोक्त स्थानों के अलावा, इसी काल में अन्य कई केन्द्रों में भी हिंदी का प्रचार हो रहा था। उसमें कुछ केन्द्रों के नाम कुंभकोणम, मन्नारगुडी, काँचीपुरम, विरुदनगर, राजपालयम, दिंडुक्कल, पेरियकुलम, कोयंबत्तूर, नीलगिरि, नागपट्टनम आदि उल्लेखनीय है।

<u>महत्त्वपूर्ण सूचनाएं:-</u>

- रचनात्मक कार्य पद्धति द्वारा हिंदी प्रचार को चलाने के लिए देशपिता ने कई संस्थाएं स्थापित की, उसमें एक दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास थी।
- इस संस्थान की गतिविधियाँ है – निःशुल्क हिंदी प्रशिक्षण द्वारा दक्षिण भारत भर हिंदी भाषा का प्रचार, हिंदी परीक्षाओं का आयोजन, पदवीदान समारोह का आयोजन, हिंदी प्रचार समाचार, "दक्षिण भारत" पत्रिकाओं के प्रकाशन के अलावा हिंदी यात्री दल, हिंदी प्रचार सप्ताह, हिंदी प्रचारक सम्मेलन, प्रमाणित प्रचारक सप्ताह, हिंदी प्रचारक सम्मेलन, प्रमाणित प्रचारक योजना आदि इस संस्थान की कार्य योजना में है। आगे चलकर उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान के अंतर्गत एम.ए, एम.फिल, पी.एचडी, डी.लिट, स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा, पत्रकारिता डिप्लोमा आदि पाठ्यक्रमों का संचालन इस संस्थान के कार्यक्रम के अंग बन गए है।
- सन् 1926 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना स्वतंत्र रूप से हुई तथा उसका विधिवत् पंजीकरण कराया गया।
- प्राथमिक, मध्यमा, राष्ट्रभाषा नामक परीक्षाएं 1926 से चलाई जा रही है।
- 1939 से प्रवेशिका, विशारद तथा 1948 से राष्ट्रभाषा प्रवीण नाम की उपाधि परीक्षा चलने लगी।
- 2 अक्तूबर, 1964 को संस्थान की ओर से सभा के प्रांगण में ही अन्य शिक्षा एवं शोध संस्थानों का शुभारंभ हुआ।
- हिंदी साहित्य के संबंध में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नै, उत्तर भारत के किसी भी विश्व विद्यालय से कम नही है। इसके अलावा दक्षिण के आर्थिक क्षेत्र में हिंदी आंदोलन की देन सर्वथा स्पृहणीय एवं स्मरणीय है।
- तमिलनाडु हिंदी प्रचार सभा की स्थापना सन् 1936 में विधिवत की गई थी। शहर के कई स्थानों में तथा बाद में तंजाऊर, मदुरै, तिरुनेलवेली, उदगमंडलम आदि प्रमुख नगरों में शिक्षण केन्द्र खोले गए।
- तमिलनाडु सहित दक्षिण के सामाजिक जीवन में पतिविहीन नारियों की हालात बहुत ही सोचनीय रही थी। उन्होंने भी हिंदी प्रचार आंदोलन में शामिल होकर हिंदी सीखने तथा सिखाने का कार्य किया अर्थात् उन्होंने अपनी आजीविका का नवीन मार्ग ढूँढ निकाला और स्वावलंबी होकर जीने और अपनी कमाई की रोटी खाने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया था। उन्हें देखकर कई अन्य आश्रयहीन औरतों ने उनका अनुकरण किया।

निष्कर्ष यह है कि दक्षिण के हिंदी आंदोलन का स्थायी तथा विकासोन्मुख प्रभाव, पुरुषों की अपेक्षा नारियों पर अधिक पड़ा है। हिंदी ने दक्षिण के कई अनाथ एवं निराश्रय नारियों के दुखी एवं मर्मभेदक जीवन में आशा और उत्साह की उमड़ती तरंगें जगा दी है, इसमें कोई संदेह नही है।

संकलित

(साभार:- दक्षिण में हिंदी प्रचार आंदोलन का इतिहास)

पहाडों की रानी 'ऊटि'

जी.भुवनेश्वरी, आरक्षण पर्यवेक्षक II/सेलम

तमिलनाडु में देखने लायक प्रसिद्ध पर्यटन स्थानों में ऊटि भी एक है। ऊटि एक 'हिल स्टेशन' है। किसी भी मार्ग से हम ऊटि पहुंच सकते हैं। मैसूर होकर या कोयंबत्तूर होकर और चाहे तो मेट्टुपालयम से नीलगिरि रेलमार्ग से भी, पहाड़ दर पहाड़, घाटी दर घाटी नए दृश्य देखने लायक मिलते हैं।ये दृश्य इतने मनमोहक होते है कि इसे जितनी भी बार देखा जाए फिर भी मन नहीं भरता। ऊटि में हर मौसममें कुछ न कुछ नया-नया दृश्य देखने को मिलता है। प्रति वर्ष जुलाईके शुरू में जाएं तब आंध्र, तमिलनाडु में आग बरस रही होती है, लेकिन ऊटि में बादलों पर भीगी चादर तनी हुई दिखाई देती है।बारिश लगातार होती रहती है। तब हम कमरे की खिड़की से ही वर्षा में नहाती पहाड़ियों, चीड़ वृक्षों,दूर तक फैली हुई उँची-नीची छतों को निहारते रह सकते हैं। यहा तक कि इस वर्षा का आनंद हम छाता उठाकरबाहर जाकर कर सकते हैं, भींगने के एक नए अनुभव के लिए। अंग्रेज़ लोग इसे'उटकमांड'नाम दिये, लेकिन लोग इसे'ऊटी' कहकर ही बुलाते हैं। 36 वर्ग किलोमीटर और समुद्रतल से 7,500 फुट की ऊँचाई पर बसा'ऊटी', पर्वतीय पर्यटक स्थानों में सबसे ज्यादा चर्चित और प्रसिद्ध स्थान है। अपनी सुंदरता और मनोरम नीलगिरि पर्वतों के लिए प्रसिद्ध होने के कारण 'ऊटी' को **'पहाड़ों की रानी'** कहा जाता है।

स्टोन हाउस

ऊटी को 1819 में कोयंबत्तूर जिला के तत्कालीन कलेक्टरजॉन सुलीवान द्वारा खोजा गया था। सुलीवान ने यहाँ एक स्टोन हाउस बनवाया जिसके बाद यहाँ ऊटी शहर की नींव पड़ी थी।

अपनी विभिन्नताओं के कारण ही ऊटी आज भी पर्यटकोंको बहुत ही आकर्षित करता है । कर्नाटक, केरल तथातमिलनाडु राज्यों की सीमा पर बसे यह शहर की हरियाली,झरने तथा झीलें, पर्यटकों को ऊटी में ही रुकने के लिए विवश कर देती हैं ।हमें वर्षपर्यंत ऊटी जा सकता है, परंतु अप्रैल सेजून तथा सितंबर से अक्तूबर का समय ही बेहतर रहता है ।

ऊटी का निकटतम हवाई अड्डा कोयंबत्तूर है । कोयंबत्तूर के पासमेट्टुपालयम से ऊटी तक खिलौना रेलगाड़ी को इंजन आगे से ही नहीं खींचता, बल्कि एक इंजन पीछे से धक्का भी देता है । इस यात्रा में खिलौना गाडी जब सुरंग पथ से आगे बढते है तो, बच्चे तो बच्चे, बडे भी खुश होकर चिल्ला उठते हैं । ट्रेनों से जब यात्री पहाडों से निकलते पानी को जब देखते है तो बहुत ही आनंद का अनुभव करते हैं । इन पहाडों से निकलनेवाले छोटे छोटे झरने आने वाले यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । इसमजेदार रेल यात्रा में पर्यटक चाय बागानों के सौंदर्य का मजा भी लेते हैं ।

ऊटी दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से बस मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है । यहाँ देखने के लिए बहुत कुछ है । सबसे पहले बोटानिकल गार्डन ।

डोडा बेट्टा

ऊटी से करीब 10 किलोमीटर दूर यह सबसे ऊंची पहाडी है । इसकी ऊंचाई 8,640 फुट है । यहां से पूरा ऊटी शहर ही नहीं बल्कि दूर बसा कोयंबत्तूर शहर को भी देख सकते हैं । यहां प्रायः बादल छाए रहते हैं और वर्षा कभी भी आकर इसका स्वागत कर सकती है । बारिश के समय यहाँ का दृश्य और भी मनोरम हो जाता है ।सारे पेड़- पौधे हरियाली से भर जाते हैं । पहाडों पर बर्फ की भी कभी कभी बारिश होती है, जिस से पहाड़ पूरी तरह ढक जाते हैं जिसके कारण पहाड़ पूरा सफेद चादर की तरह दिखाई देता है । इस दृश्य को देख कर ऐसा मालुम होता है मानो बादल नीचे उतर आए हो और पृथ्वि से इसका मिलन हो रहा हो । ऐसा मनोरम दृश्य देखकर यात्री प्रफुल्लित हो उठते हैं ।

बोटानिकल गार्डन

बोटानिकल गार्डन रेलवे स्टेशन से एक किलोमीटर दूर है। 1847 ई में लॉर्ड ड्रीडडेल द्वारा निर्मित यह स्थान उद्यान वनस्पति शास्त्रियों और प्रकृति-प्रेमियों के आकर्षण काप्रमुख केंद्र है। प्रति वर्ष मई महिने में होने वाली कई प्रमुख प्रदर्शनियाँ भी यहां की विशेषता बनी रहती है। इसी उद्यान में, पौराणिक गाथाओं के अनुसार हजारों वर्ष पुराना एक वृक्ष है, जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, इसे देखने दूर दूर से लोग आते हैं। इसके आसपास एक बडा सा झील भी है। यह भी काफी पुराना है। लगभग सन् 1824 से यह झील यहाँ मौजूद है। जहां पर्यटक नौका विहार, हाउसबोटिंग और तैराकी का आनंद उठाते हैं। झील के किनारे सुन्दर सा फूलों से सजा हुआ एकपार्क और इसके चारों तरफ़ चाय का बगान है, जहां पर सीजन के शुरू होते ही घुडदौड का आयोजन होता है।

<u>वेनलाक डाउंस</u>

ऊटी-मैसूर की ओर 104 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में'वेनलाक डाउंस'फैला हैं। इसका नाम मद्रास के भूतपूर्व गवर्नर बेनलाक डाउंस के नाम से पडा है।यह हरी- हरी घास से ढका हुआ एक सुन्दर ढ़लाऊ मैदान के समान दिखने वाला दृश्य है। प्रकृति - प्रेमी खेल - कूद पसंद करने वाले यात्री यहाँ आते है और कई तरह के खेलों को जैसे - टेबल टेनिस,बिलियार्डस, तास आदि का आनंद उठाते हैं। जिमखाना क्लब के गोल्फ लिंक्स भी पर्यटक के आकर्षण के केंद्र हैं।

<u>टाइगर हिल</u>

कुन्नूर जाते समय यह रास्ते में पडने वाला एक पिकनिक स्थल है। यहां पर्यटक परिवार समेत पिकनिक का आनंद उठा सकते है।

डॉलफिन नोज व्यू पाइंट

ऊटी से 12 किलोमीटर दूर स्थित यह स्थल नीलगिरि की हरीतिमा का प्रतिनिधित्व करता है। यहां तक पहुंचने का रास्ता बेहद आकर्षक एवंरोमांचक है। यह मार्गचाय बागानों के बीच से गुजरता है। पर्यटक चाय बागानों के बीच खडे होकर फोटो खिंचवाने का लोभ नहीं रोक पाते हैं। क्यू पाइंट से कैथरीन वाटर फाल तथा जनजातीय लोगों के छोटे-छोटे घरों का अवलोकन भी कर सकते हैं। पर्यटक यहां के बगान से बढिया चाय और खासकर मसाला चाय खरीदना पसंद करते हैं।

हिंदुस्तान फोटो फिल्मस्

ऊटी से आठ किलोमीटर दूर वेनलाक हाउस में हिंदुस्तान फोटो फिल्म उत्पादन का अपनेतरह का एक अनोखा इकलौता भारतीय कारखाना है। यहाँ पर्यटकों को फोटो उद्योग की जानकारी भी दी जाती है।

मुदुमलै वन्य जीवन अभयारण्य

ऊटी मैसूर मार्ग पर ऊटी से लगभग 67 किलोमीटर दूर परमुदुमलै वन्य जीवन अभयारण्य है। इस स्थान पर बाघ, हिरण, भेड़िया,भालू,सांप आदि देखे जा सकते हैं। यहाँ का मुख्य आकर्षण स्वच्छंद विचरणकरतेहुए हाथी हैं।

मरलीमुंड झील

ऊटी रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर दूरी पर मरलीमुंड झील स्थित यह एक बढ़िया पिकनिक स्थान है, जहाँ से ऊटी को पानी आपूर्ति की जाती है। यहाँ फिल्मों की शूटिंग भी देखी जा सकती है।

कलहाटी झरना

ऊटी से 13 किलोमीटर दूर में स्थित है कलहाटी झरना। इस झरने की ऊँचाई एक सौ बीस फुट है, परंतु गांव हिसारपुर घाट तक छह किलोमीटर दूर टैक्सी या बस से जाना है। उसके बाद दो किलोमीटर पैदल भी जाना पड़ता है।

इल्क हिल

ऊटी के नजदीकही इल्क हिल है। इस रमणीय स्थान पर सुब्रह्मण्यम का एक शिला मंदिर है। यहाँ चाय बागानों की शोभा भी देखने लायक है। स्नोडोन तथा इंक की पहाड़ियां भी दर्शनीय लायक दृश्य हैं, परंतु घने पेड़ों से ढकी कायरन पहाड़ी सुंदरता में इन दोनों पहाड़ियों से भी बेजोड़ है।

इसके अलावा फार्म हिल,एवलांच हिल,अपर भवानी डैम आदि भी बहुत ही आकर्षण का केंद्र बना हुआ हैं।

ऊटी से नीलगिरि तेल,मसाले,हस्तशिल्प तथाहस्तकला की वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं। इसके अलावा यूकलिप्टस् पेड़ के पत्तों से बनाएं जानेवाले तेल का निर्माण भी यहां होता है। जिसका नाम यूकलिप्टस् तेल है। ऊटी गए और हाथ से बनी चाकलेट नहीं खाई तो क्या किया ? यह चाकलेट यहाँ हर दुकान पर मिलती है। पर्यटक प्राय: पास-पड़ोस में उपहारस्वरूप देने के लिए चाकलेट जरूर खरीदते हैं।

ऊटी के बारे में जितना कहा जाए वह कम ही है। इसकी सुंदरता को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। इसका दर्शन करके ही इसकी सुंदरता को महसूस किय जा सकता है। समय निकालकर ऊटी की यात्रा एक बार जरूर करें। यह कम कीमत में विदेश यात्रा के समान है। जिन नए जोड़ों की शादी हुई हो वो घुमने के लिए ऊटी को ही चुनते है। स्वीटजरलैंड के समान ही ऊटी की यात्रा होती है। इसलिए ऐसे अवसर को न गवांकर इसकी सुंदरता का आनंद उठाना चाहिए।

****

राजस्थान के प्रमुख पर्यटन, दर्शनीय व धार्मिकस्थल

नंदलाल मीना
मुख्य स्वास्थ्य एवं मलेरिया निरीक्षक/मेट्टुपालयम

ये कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत को इसकी विभिन्नता में भी सौंदर्य के लिए जाना जाता है। भारत के प्रत्येक राज्य में अनेक स्थल हैं जिनमें से कुछ अपने प्राकृतिक सौंदर्य तो कुछ अपनी अनूठी खासियतों के लिए प्रसिद्ध हैं। आज दुनियाभर में पर्यटकों को 29 राज्यों का भारत देश सबसे ज्यादा आकर्षित करता है।
इन राज्यों मे राजस्थान राज्य अपनी शाही संस्कृति और ऐतिहासिक स्थलों और अनेक बावडियों के लिए दुनियाभर में लोकप्रिय है।राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसको पूर्व में राजाओं की भूमि के रूप में जाना जाता है। राजस्थान राज्य 342,239 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है जो भारत के कुल क्षेत्रकल का 10.4% है। भले ही राजस्थान भारत का एक बड़ा राज्य है, लेकिन इसका ज्यादातर भाग ग्रेट इंडियन डेजर्ट, थार द्वारा कवर किया गया है। राजस्थान भारत का एक बहुत ही खास पर्यटन राज्य है जो हर साल अपने आकर्षक पर्यटन स्थलों की वजह से दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है।

भारतीय सभ्यता में सबसे पुराना होने की वजह से इस राज्य में कई शाही राजा-महाराजाओं का राज रहा है और यह महाराजाओं के भव्य महलों और राजसी किलों किलों का क्षेत्र है। राजस्थान में वास्तुकला और कला की एक विशिष्ट शैली है जो इसको विश्व के सबसे सांस्कृतिक रूप से विविध स्थानों में से एक बनती है। भारत के सबसे आकर्षक राज्यों में से एक राजस्थान के 10 प्रमुख पर्यटन स्थलों निम्नलिखितहैं।

1 पिंक सिटी जयपुर –

जयपुर राजस्थान की राजधानी और प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह शहर अपनी शाही किले, महलों, प्राचीन इमारतों और दुनिया के कई आकर्षक होटलों की वजह से राज्य का प्रमुख पर्यटन शहर है। जयपुर में स्थित कई विशाल किलों और महलों को देखने के लिए दुनिया भारत से यहां पर्यटक आते हैं। बता दें कि जयपुर शहर लंबे समय से भारत के इतिहास के सबसे खास आकर्षणों में से एक रहा है। अगर आप पिंक सिटी के नाम से प्रसिद्ध जयपुर शहर में घूमने के लिए आते हैं तो यह आपके जीवन की सबसे यादगार यात्रा में से एक होगी। आपको बता दें कि साल 2008 में हुए कॉनडे नास्ट ट्रैवलर रीडर्स चॉइस सर्वे में जयपुर शहर को एशिया में यात्रा करने के सबसे अच्छे स्थलों में से सातवां स्थान दिया था। अगर आप जयपुर घूमने के लिए आते हैं तो आप यहां पर कई किले, स्मारक, मंदिरों, उद्यानों और संग्रहालय को देखने के लिए जा सकते हैं। जयपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में हवा महल, एम्बर फोर्ट, जयगढ़ फोर्ट, जंतर मंतर, जल महल, नाहरगढ़ फोर्ट, सिटी पैलेस और रामबाग पैलेस के नाम सबसे पहले आता है।

2. जैसलमेर –

जैसलमेर राजस्थान में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो अपने कई पर्यटन आकर्षणों की वजह से राजस्थान में घूमने की सबसे अच्छी

जगहों में से एक है। आपको बता दें कि यह थार रेगिस्तान में सुनहरे टीलों के कारण इसे सुनहरा शहर के नाम से भी जाना जाता है। जैसलमेर अपनी कई मानव निर्मित झीलों, जैन मंदिरों, हवेलियों और पत्थरों के महलों के साथ सजा हुआ है। इस शहर में आप डेजर्ट और जीप सफारी का मजा भी ले सकते हैं। जैसलमेर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में जैसलमेर का किला, गडीसर झील, जैन मंदिर, सैम सैंड ड्यून्स, पटवों की हवेली, नाथमल की हवेली, अमर सागर झील, डेजर्ट नेशनल पार्क , डेजर्ट कल्चर सेंटर एंड म्यूजियम, ताज़िया टॉवर और बादल महल के नाम शामिल है।

3. जोधपुर –

जोधपुर राजस्थान का एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण है इसके साथ ही यह राज्य सा दूसरा सबसे बड़ा शहर और दूसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर भी है। बता दें कि इस शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ राजपूत शासक मारवाड़ के राव जोधा सिंह द्वारा की गई थी। मंडोर की पूर्व राजधानी के पतन जोधपुर को मारवाड़ की नई राजधानी के रूप में स्थापित किया गया था। पूरे साल यहां एक एक उज्ज्वल धूप का मौसम होने की वजह से जोधपुर को सन सिटी भी कहते हैं। राजस्थान राज्य का एक प्रमुख पर्यटन शहर होने के साथ इसको रणनीतिक रूप से पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्रमुख शहर भी माना जाता है, क्योंकि यह भारत-पाकिस्तान सीमा से सिर्फ 250 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर आप जैसलमेर किला, बड़ा बाग, पटवों-की-हवेली, सैम सैंड ड्यून्स, थार हेरिटेज म्यूज़ियम, गड़ीसर झील, नथमल की हवेली, जैन मंदिर और सलीम सिंह की हवेली जैसे पर्यटन स्थलों की सैर कर सकते हैं।

4. माउंट आबू –

राजस्थान का एक मात्र हिल स्टेशन होने की वजह से माउंट आबू राजस्थान में पर्यटकों द्वारा घूमी जाने वाली सबसे प्रमुख जगहों में से एक है। आपको बता दें कि माउंट आबू अरावली रेंज में एक उच्च पथरीले पठार के ऊपर स्थित है और यह घने जंगलों से घिरा हुआ है। यहाँ की शांत जलवायु और यहां से मैदानों का दृश्य आने वाले पर्यटकों के दिलों में काफी उत्साह पैदा करता है। यहाँ के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में दिलवाड़ा जैन मंदिर, गुरु शिखर, अलीगढ़, नक्की झील, सनसेट पॉइंट, अचलेश्वर महादेव मंदिर, ट्रेवर का टैंक, माउंट आबू बाजार, वन्यजीव अभयारण्य और टॉड रॉक का नाम शामिल है। यहाँ स्थित निकी झील में आप बोटिंग का मजा भी ले सकते हैं।

5.बीकानेर –

बीकानेर राजस्थान राज्य का एक बहुत ही प्रमुख पर्यटन स्थल है। 1488 में राठौड़ राजपूत शासक राव बीका ने बीकानेर शहर की स्थापना की थी। बता दें कि उस समय के प्रतिद्वंद्वी जाट शासकों से जमीन छीन ली गई थी। बीकानेर शहर ने भले ही अतीत में कितने युद्ध देने हैं लेकिन आज भी यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह शहर

अपनी स्वादिष्ट मिठाइयों और स्नैक्स के लिए काफी प्रसिद्ध है। अगर आप राजस्थान राज्य में घूमने के लिए आते हैं तो आपको एक बार बीकानेर में स्थित किलों को देखने और यहां के स्वादिष्ट भोजन का स्वाद चखने के लिए जरुर आना चाहिए। बीकानेर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में जूनागढ़ किला, लालगढ़ पैलेस, नेशनल रिसर्च सेंटर, ऑन कैमल, श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर, गंगा सिंह संग्रहालय, सादुल सिंह संग्रहालय और जैन मंदिर का नाम शामिल है। इसके साथ ही बीकानेर में आयोजित विभिन्न मेले भी हर साल भारी संख्या में पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

6. उदयपुर –

उदयपुर राजस्थान में घूमने के लिए सबसे अच्छे शहरों में से एक है जो अपने सामान्य मठ, झीलों लिए जाना जाता है। यह शहर कभी मेवाड़ के सिसोदिया राजपूतों की राजधानी था और अपने खूबसूरत महलों की वजह से काफी फैमस है। उदयपुर की स्थापना 1553 में सिसोदिया राजपूत शासक महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। यहाँ उस समय कई खूबसूरत महल थे जिनमे से ज्यादातर को होटलों में बदल दिया गया है। यह शहर अच्छी तरह से योजनाबद्ध हैं और यहां हर साल भारी संख्या में देश-विदेश से पर्यटक आते हैं। उदयपुर के पर्यटन स्थलों में सिटी पैलेस, लेक पिछोला, लेक पैलेस, लेक गार्डन पैलेस, रॉयल विंटेज कार म्यूजियम, बागोर की हवेली, सहेलियों की बाड़ी,जगदीश टेम्पल, शिल्पग्राम और मोती मगरी का नाम शामिल है।

7. चित्तौड़गढ़ –

चित्तौड़गढ़ का नाम भी राजस्थान के टॉप 10 पर्यटन स्थलों की लिस्ट में शामिल है। चित्तौड़गढ़ अपने कई आकर्षणों के लिए दूर-दूर तक जाना जाता है। इस शहर की हर इमारत आज भी अपने त्याग और वीरता की कहानी को बताती है। मेवाड़ के तत्कालीन राज्य की राजधानी चित्तौड़गढ़ किलों, गढ़ों, खंडहरों और सदाबहार कहानियों से भरा हुआ है। यहां की कई शानदार लड़ाइयों के लिए चित्तौड़गढ़ को आज भी इतिहास के पन्नों में याद किया जाता है, खासकर अलाउद्दीन खिलजी की घेराबंदी। चित्तौड़गढ़ अपने सबसे खास आकर्षण चित्तौड़गढ़ किले के लिए दुनिया भर में मशहूर है, जो कि एक पहाड़ी पर बना एक विशाल किला है और लगभग 700 एकड़ के क्षेत्र को कवर करता है। चित्तौड़गढ़ किले में सबसे प्रसिद्ध आकर्षण रानी पद्मिनी महल है जिसका नाम नाम स्वयं रानी पद्मिनी के नाम पर रखा गया है। चित्तौड़गढ़ अन्य पर्यटन स्थलों में मीरा मंदिर, काली माता मंदिर, बस्सी वन्यजीव अभयारण्य और गौमुख जलाशय का नाम शामिल हैं।

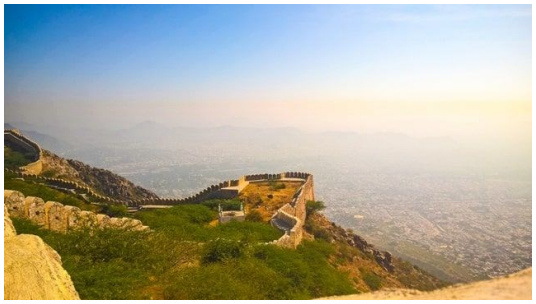

8. अजमेर-

अजमेर राजस्थान का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है जो अपने इतिहास और संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह शहर पुष्कर के पास स्थित है जो कि एक हिंदू तीर्थ स्थल है और ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का घर है। अजमेर को हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के लिए एक खास तीर्थ स्थल माना जाता है। एक प्रमुख तीर्थ स्थल होने के साथ यह अपने

कई आकर्षक पर्यटन स्थलों की वजह से दुनिया भर के पर्यटकों का स्वागत करता है। आपको बता दें कि इस साल अजमेर को HRIDAY – हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एंड ऑग्मेंटेशन योजना भारत सरकार की एक विरासत स्थल के रूप में चुना गया था। अजमेर शरीफ दरगाह, तारागढ़ फोर्ट, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, आबकारी फोर्ट एंड म्यूजियम, आनासागर लेक और सोनीजी की नसियां यहां के प्रमुख स्थल हैं।

9. पुष्कर

जब राजस्थान के प्रमुख पर्यटक और धार्मिक स्थलों की बात होती है तो पुष्कर कैसे पीछे रह सकता है। बता दें कि राजस्थान के अजमेर जिले में पवित्र पुष्कर शहर को भारत में तीर्थ स्थलों का राजा कहा जाता है। यह शहर पुष्कर झील के तट पर स्थित है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह भगवान् शिव के आंसुओं से बनी है। पुष्कर भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है और इसकी उत्पति की तारीख अज्ञात है। पुष्कर की कई तरह की हिंदू पौराणिक कथाओं से जुड़ी हुई है। यह शहर अपने विभिन्न मंदिरों और घाटों के लिए प्रसिद्ध है जो हर साल स्नान के दौरान सैकड़ों तीर्थ यात्रियों को आमंत्रित करता है। पुष्कर का सबसे शानदार आकर्षण वार्षिक ऊंट मेला है जो पाँच दिवसीय मेला है। इस मेले में लोग पशुधन खरीदते और बेचते हैं। इस शहर में घूमें जाने वाले स्थलों में पुष्कर झील, ब्रह्मा मंदिर, सावित्री मंदिर, आपेश्वर मंदिर, वराह मंदिर, रंगजी मंदिर और मन महल के नाम शामिल हैं

10. सवाई माधोपुर-

सवाई माधोपुर राजस्थान की सबसे खास जगहों में से एक है जिसको कछवाहा राजपूतों के महाराजा सवाई माधोसिंह ने बनवाया था और इसकी स्थापना 1763 में हुई थी। वैसे तो सवाई माधोपुर के पास कोई उल्लेखनीय पर्यटक आकर्षण नहीं है लेकिन यहां स्थित रणथंभौर किला और रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान ने इसको राजस्थान का एक प्रमुख पर्यटन स्थल बना दिया है। देश के स्वतंत्र होने से पहले रणथम्भौर के जंगल जयपुर के कछवाहा राजपूतों के शिकार की जगह थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद इसे सवाई माधोपुर खेल अभयारण्य के रूप में स्थपित किया जो 1973 में एक बाघ अभयारण्य बन गया था और 1980 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा भी मिल गया।

****

नक्सली कलम

तारकेश्वर महतो "गरीब" -
तकनीशियन iii, डीजल शेड/ईरोड

जब से कलम को

मेरे हाथों ने थामीं है

लोग कहने लगे

मैं आजाद नक्सली हूँ।

साबित करता हैं, मेरे डिग्रियाँ

मेरे किताबों की गठरी

पॉकेट की कलम

यें कलम नहीं, हथियार है

और मैं कलमीं गुनाहगार हूँ।

डर - डर के चलता हूँ

सुनसान सड़कों में

कहीं अपराधीं, उपद्रवीं

समझ कर भींड़ो में

कुचला न जाऊं हैंवानों से !

जब तक रहेगी साँस

करता रहूँगा अभ्यास

जल, जंगल और जमीन

माँय, माटी और भाषा

के लिए लडता रहूँगा

और चलती रहेंगी "नक्सली कलम" !

******

पुत्री,अमित कुमार
कनिष्ठ इंजीनियर/संकर्म/सेलम

भारतीय रेल – पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली

स्मिता वी.एस., स्वास्थ्य निरीक्षक, ईरोड

पर्यावरण प्रदूषण समस्या आज हम सभी के लिए चिंता का विषय है। भारतीय रेलवे ने मुख्य रूप से दो मोर्टों पर कई उपाय के माध्यम से हरित क्रांति लाने का फैसला किया है।

1.नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत का बढावा और जीवाश्म ईंधन पर कम निर्भरता और जैसे कार्बन फुटप्रिंट को कम करना। 2. प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी अवशिष्ट प्रबंधन।

<u>हरित ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रबंधन</u>

माननीय रेस मंत्री श्री. पीयूष गोयल जी के द्वारा दिए गए कुछ अंतर प्रकार के बारे में नीचे दियी गया है।

1.रेल मंत्रालय की योजना 2020-21 तक 1000 मेगावाट बिजली बनाने की है। इस कदम से भारतीय रेलवे को नवीकरण स्त्रोत से अपनी विद्यूत ऊर्जा का लगभग 10 प्रतिशत स्त्रोत प्राप्त करने में मदद मिलेगी। अब तक लगभग 71.9 मेगावाट सौर पैनल (सौर संयंत्रों) को पहले से ही सेवा भवनों और रेलवे स्टेशन के छत पर लगाया जा चुका है।

2. भरतपूर – कोटा रेल खंड में ग्रीन – कॉरिडोर बनाने के उद्देश्य से, रेलवे ने राजस्थान के जैसलमेर में 26 मेगावाट पवन चक्की संयंत्र लगाएगा। ऊर्जा के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में एक भारतीय रेलवे ने राजस्थान में प्रतिवर्ष 50 मिलियन यूनिट बिजली बनाने के लिए पवन चक्की संयंत्र की स्थापना की है।

3. रेलवे स्टेशनों और सेवा भवनों पर 100% एल.ई.डी प्रकाशन की व्यवस्था की गई है।

4. राष्ट्रीय ट्रांस्पोटर (National Transport) ने डीजल लोकोमोटिव के लिए 5% बायोडीजल को उच्च गति वाले डीजल में मिश्रित करना शुरू कर दिया है।

5. डेमू के 23 पॉवरकार के यंत्र में 20% सी. एन. जी. प्रतिस्थापन किया गया है।

हरित- पृथ्वी के लिए अवशि प्रबंधन

रेलवे द्वारा तैयार अवशिष्ट प्रबंधन की हालिया (नयी) नीति नीचे दी गई है-

निम्नलिखित पहलूओं सहित भारतीय रेलवे के द्वारा कचरा प्रबंधन के संबंध में समय- समय पर दिशा निर्देश जारी किए गए है।

1. रेलवे स्टेशन क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली ठोस अवशिष्ट का संग्रह, अलगाव और निपटान
2. खान-पान सेवाओं से उत्पन्न होने वाले कचरे का संग्रह, अलगाव एवं निपटान
3. बायोडीग्रेडेबल और नॉन बायोडीग्रेडेबल कचरों का निपटान

4. ई- कचरें जैसे खतरनाक कचरों का निपटान
5. खुले में कचरा जलाने पर रोक

विभिन्न बिंदुओं से एकत्र किए गए कचरे को स्थानीय निकायों द्वारा नामित स्थान जैसे नगर निगम, नगर पालिका पर भेज दिया जाता है। जहां कचरों का अंतिम निपटान किया जाता है। रेलवे ने ठोस कचरें का निपटान के लिए एक पायलेट परियोजना का भी प्रस्ताव दिया है। जिसमें प्रमुख रेलवे टर्मिनलों में उत्पन्न किए जा रहे कचरें को पर्यावरण के अनुकूल तरीके से अलगाव एवं निपटान और जैव प्रदूषित कचरें को ऊर्जा में बदलना शामिल है।

सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म पर बायोडीग्रेडेबल गीला) और नॉन बायोडीग्रेडेबल (सूखा) कचरो का डिब्बा रखने के लिए विस्तृत निर्देश जारी किए गए है। खान-पान सेवाओं में बायोडीग्रेडेबल (गीला) और नॉन बायोडीग्रेडेबल (सूखा) कचरें का संग्रह के लिए अलग- अलग रंगों का कचरें का डिब्बा उपलब्ध करने का निर्देश दिया है। खान-पान सेवाओं के अलावा, जिन्हें सभी प्लेटफार्म और यात्रियों के सुविधानुसार सभी क्षेत्रों में रखा जाना है।

अभी तक भारतीय रेल के सभी मंडलों के स्ट्शनों पर कचरें का निपटान बायोडीग्रेडेबल (गीला) और नॉन बायोडीग्रेडेबल (सूखा) के अनुरूप होता है।

आज विश्व भर में जल आपूर्ति का गहरा संकट छाया हुआ है। पर भारतीय रेलवे ने जल संकट को कम करने के लिए कुछ प्रमुख स्टेशनों पर दूषित जल को अच्छा जल बनाकर कुछ जगहों पर जैसे प्लेटफार्म की सफाई, रेलगाड़ी धुलाई, शौचालय इत्यादि में प्रयोग किया जाता है। इसके लिए दूषित जल उपचार संयंत्र (Effluent treatment plant)कुछ प्रमुख स्टेशनों में स्थापित किया गया है।

****

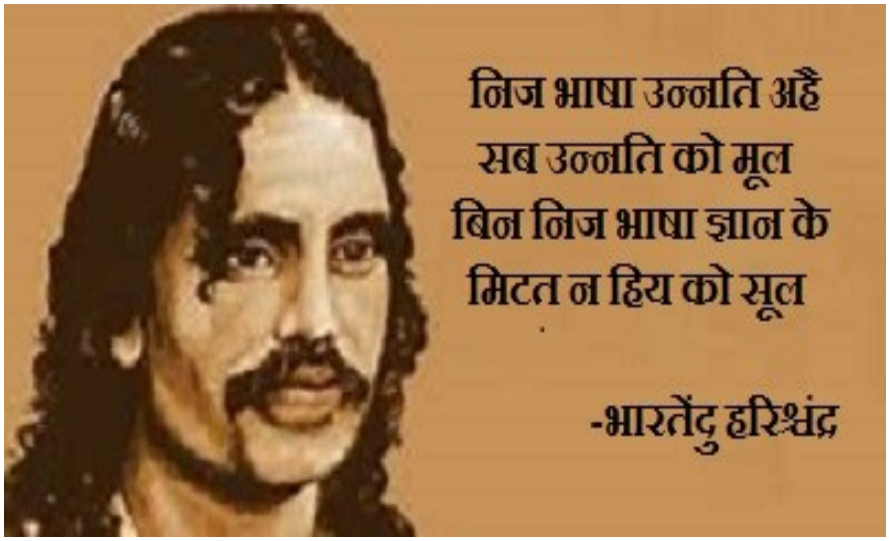

तमिल भाषा व साहित्य का संक्षिप्त परिचय

पी अशोकन, तकनीशियन III
राजभाषा अनुभाग

तमिल एक मानमूल है, जिनका मुख्य निवास भारतके तमिलनाडुतथा उत्तरी श्रीलंकामें है। तमिल समुदाय से जुड़ी चीजों को भी तमिल कहते हैं जैसे, तमिलतथा तमिलनाडुके वासियों को भी तमिल कहा जाता है। तमिल, द्रविड़ जाति की ही एक शाखा है।

मनुसंहिता, महाभारतआदि प्राचीन ग्रंथों में द्रविड देश और द्रविड जाति का उल्लेख है। मागधीप्राकृतया पालीमें इसी 'द्राविड' शब्द का रूप 'दामिलो' हो गया। तमिल वर्णमाला में त, ष, द आदि के एक ही उच्चारण के कारण 'दामिलो' का 'तामिलो' या 'तमिल' हो गया। शंकराचार्यकी एक रचना यह शब्द आया है। हुएनसांगनामक चीनी यात्री ने भी द्रविड देश को 'चि—मो—लो' करके लिखा है। तमिलव्याकरणके अनुसार द्रमिल शब्द का रूप 'तिरमिड़' होता है। आजकल कुछ विद्वानों की राय हो रही है कि यह 'तिरमिड़' शब्द ही प्राचीन है जिससे संस्कृतवालों ने 'द्रविड' शब्द बना लिया। जैनोंके 'शत्रुंजय माहात्म्य' नामक एक ग्रंथ में 'द्रविड' शब्द पर एक विलक्षण कल्पना की गई है। उक्त पुस्तक के मत से आदि तीर्थकर ऋषभदेवको 'द्रविड' नामक एक पुत्र जिस भूभाग में हुआ, उसका नाम 'द्रविड' पड़ गया। पर भारत, मनुसंहिता आदि प्राचीन ग्रंथों से विदित होता है कि द्रविड जाति के निवास के ही कारण देश का नाम द्रविड पड़ा।

तमिल जाति अत्यंत प्राचीन हे। पुरातत्वविदों का मत है कि यह जाति अनार्य है और आर्योंके आगमन से पूर्व ही भारत के अनेक भागों में निवास करती थी। रामचंद्रने दक्षिण में जाकर जिन लोगों की सहायता से लंका पर चढ़ाई की थी और जिन्हें वाल्मीकिने बंदर लिखा है, वे इसी जाति के थे। उनके काले वर्ण, भिन्न आकृति तथा विकट भाषा आदि के कारण ही आर्यों ने उन्हें बंदर कहा होगा। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि तमिल जाति आर्यों के संसर्ग के पूर्व ही बहुत कुछ सभ्यता प्राप्त कर चुकी थी। तमिल लोगों के राजा होते थे जो किलेबनाकर रहते थे। वे हजार तक गिन लेते थे। वे नाव, छोटे मोटे जहाज, धनुष, बाण, तलवार इत्यादि बना लेते थे और एक प्रकार का कपड़ा बुनना भी जानते थे। राँगे, सीसे और जस्ते को छोड़ और सब धातुओं का ज्ञान भी उन्हें था। आर्यों के संसर्ग के उपरांत उन्होंने आर्यों की सभ्यता पूर्ण रूप से ग्रहण की। दक्षिण देश में ऐसी जनश्रुति है कि अगस्त्यऋषिने दक्षिण में जाकर वहाँ के निवासियों को बहुत सी विद्याएँ सिखाई। बारह-तेरह सौ वर्ष पहले दक्षिण में जैनधर्मका बड़ा प्रचार था। चीनी यात्री हुएनसांगजिस समय दक्षिण में गया था, उसने वहाँ दिगंबर जैनों की प्रधानता देखी थी।

तमिलभाषाका साहित्य अत्यंत प्राचीन है। दो हजार वर्ष पूर्व तक के काव्य तमिल भाषा में विद्यमान हैं। अनुनासिक पंचम वर्ण को छोड़ व्यंजन के एक एक वर्ग का उच्चारण एक ही सा है। क, ख, ग, घ, चारों का उच्चारण एक ही है। व्यंजनों के इस अभाव के कारण जो संस्कृतशब्द प्रयुक्त होते हैं, वे विकृत्त हो जाते हैं; जैसे, 'कृष्ण' शब्द तमिल में 'किट्टिनन' हो जाता है। तमिल भाषा का प्रधान ग्रंथ कवि तिरुवल्लुवररचित कुरलकाव्य है।

तमिल भाषा एक द्रविड़ भाषा है, जिसके विश्वभर में पाँच करोड़ से अधिक बोलने वालों में से लगभग 90% भारत में रहते हैं और तमिलनाडु राज्य में केन्द्रित हैं। यह भारत की पाँचवी सबसे बड़ी भाषा है, जो देश की लगभग सात प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। मूल रूप से क़रीब 34 लाख तमिल भाषा-भाषी लोग श्रीलंका में, तीन लाख सिंगापुर में और दो लाख मलेशिया में रहते हैं। औपनिवेशिक काल में प्रवास कर गए तमिल भाषी लोगों के वंशज मॉरीशस, फ़िजी और दक्षिण अमेरिका में बस गए हैं,

तमिल भाषा भारतीय संविधान में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है, जिन्हें विशेष स्थिति और कार्य प्रदान किए गए हैं। तमिल तमिलनाडु (1956) से और केन्द्रशासित प्रदेश पाण्डिचेरी (1965) की सरकारी भाषा और श्रीलंकातथा सिंगापुरकी सरकारी भाषाओं में से एक है। तमिल लगभग 50 लाख लोगों की दूसरी भाषा है।

इतिहास

तमिल का लगभग 2,500 वर्षों का अखण्डित इतिहास लिखित रूप में है। मोटे तौर पर इसके ऐतिहासिक वर्गीकरण में प्राचीन- पाँचवी शताब्दी ई. पू. से ईसा के बाद सातवीं शताब्दी, मध्य- आठवीं से सोलहवीं शताब्दी और आधुनिक- 17वीं शताब्दी से काल शामिल हैं। कुछ व्याकरणिक और शाब्दिक परिवर्तन इन कालों को इंगित करते हैं, लेकिन शब्दों की वर्तनी में प्रस्तुत स्वर वैज्ञानिक संरचना ज्यों की त्यों बनी हुई है। बोली जाने वाली भाषा में काफ़ी परिवर्तन हुआ है, जिसमें शब्दों की स्वर वैज्ञानिक संरचना भी शामिल है। इस वजह से तमिल जन-द्विभाषित भाषा बन गई है। इस भाषा के उत्कृष्ट प्रकार को विद्यालयों में पढ़ाया जाता है तथा लेखन व औपचारिक भाषण में इसका उपयोग होता है, जबकि घरों में विकसित हुआ निम्न प्रकार अनौपचारिक बातचीत में प्रयुक्त होता है। निम्न प्रकार का भी एक मानक स्वरूप है, जो क्षेत्रीय और सामाजिक (जातीय) प्रकारों से भिन्न है, जिसका उपयोग शिक्षित वक्ता करते हैं। भारतीय और श्रीलंकाई (जाफ़ना) तमिल भाषा के बीच व्यापक क्षेत्रीय भिन्नता है। तमिलनाडु के भीतर उत्तर, पश्चिमी और दक्षिणी बोलियों में अन्तर साफ दिखाई देते हैं। क्षेत्रीय भिन्नता सामाजिक भिन्नता के अनुरूप है।

लेखन प्रणाली

ऐतिहासिक रूप से तमिल लेखन प्रणाली का विकास ब्राह्मीलिपिसे वट्टे-लुटटु (मुड़े हुए अक्षर) और कोले-लुट्टु (लम्बाकार अक्षर) के स्थानीय रूपांतरणों के साथ हुआ। सबसे प्राचीन रचना पाँचवीं शताब्दी ई. पू. की एक-पंक्ति वाले अभिलेखों तथा बर्तनों के टुकड़ों पर मिलती है। समय के साथ-साथ अक्षरों के आकार में व्यापक परिवर्तन हुए। बाद में 16वीं शताब्दी में मुद्रण के आरम्भ होने से यह थम गया। अनंगीकृत संस्कृत शब्दों को लिखने के लिए प्रयुक्त मध्यकालीन 'ग्रन्थ' अक्षरों को शामिल किए जाने व कुछ असतत आकार के अक्षरों को आधुनिक काल में सतत रूप देने के अलावा वर्णमाला में कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ है।

हिन्दी-तमिल

नीचे कुछ हिन्दी अक्षरों के तमिल समानान्तर दिये गए हैं -

- अ - அ
- आ - ஆ
- इ -இ
- ई - ஈ
- उ - உ
- ऊ - ஊ
- ए - ஏ
- ऐ - ஐ
- ओ - ஓ
- औ -ஔ
- क - க
- ख -(க)
- ग - க
- घ - (க)
- ङ - ங
- च - ச
- छ - (ச)
- ज - ஜ
- झ - (ஜ)
- ञ - ஞ
- ट - ட
- ठ - (ட)
- ड - ட

- ढ - (ட)
- ण - ண
- त - த
- थ - (த)
- द - த
- ध - (த)
- न - ந, ன
- प - ப
- फ -(ப)
- ब - ப
- भ - (ப)
- म - ம
- य - ய
- र - ர, ற
- व - வ
- श - ச
- ष - ஷ
- स - ஸ
- ह - ஹ

कारक

संरचना की दृष्टि से तमिल एक क्रियांत भाषा है। इसके वाक्य में शब्दक्रम में लोच होता है और यह अर्थक्रियात्मक रूप से नियंत्रित होता है। विशेषण, सम्बन्ध सूचक उपवाक्य, क्रिया विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा जैसे विशेषक सामान्यतः शीर्ष से पहले लगाए जाते हैं। कारक चिह्न को संज्ञा के बाद जोड़ा जाता है। वाक्यों का समुच्चय अन्तिम वाक्य को छोड़कर सभी वाक्यों की क्रियाओं के कृदंत रूपों के ज़रिये होता है। रूप-विधान की दृष्टि से तमिल एक समृद्ध भाषा है, जिसमें क्रियाओं के बाद कई तरह के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्ययों के अलावा रूप-विधान स्वरूपों में समापिका क्रिया भी शामिल है, जो आयाम, क्रिया भाव और वक्ता के रुख़ को प्रदर्शित करती है। स्वर विज्ञान में तमिल अपने 'ट', 'न' और 'अई' प्रथम दो के दंत्य, वर्त्स और मूर्धन्य तथा तीसरे वर्त्स, मूर्धन्य और पार्श्व अवस्थिति के तीन तरफ़ा विभेद के लिए उल्लेखनीय है। तमिल के इतिहास में यह तीन तरफ़ा विभेद घटकर दो तरफ़ा रह गया है, हालाँकि वर्णमाला में यह अब भी बरक़रार है।

****

एक साथी यात्री

रेखा आर.,हेल्पर
डीजल लोको शेड/ ईरोड

बहुत साल पहले की बात है। मैं विशु त्योहार के समय अपने घर आ रहा थी। उस समय मेरी बेटी डेढ वर्ष की थी। लंबी दूरी की यात्रा बहुत ही कठिन होती है और बच्चों को साथ लेके यात्रा करना हो तो, यात्रा ओर भी मुश्किल हो जाती है।

जिस रेलगाड़ी से मैं यात्रा कर रहा थी, उसमें मेरे सामने एक औरत बैठी थी। वह केरल की रहने वाली थी और राजस्थान में एक नर्स के रूप कार्य करती थी। उसके पति केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में तैनात थे। उसके दो बेटे थे। उसने बताया कि उसका छोटा बेटा, मेरी बेटी की उम्र का है। उसने उन दोनों को केरल में ही गांव में छोड़ रखा है।

मुझे यकीन नही हो रहा था कि वह औरत कैसे अपने बच्चों के बिना इतना दूर नौकरी करने चली आई। मुझे तो यही सोच कर डर लग रहा था कि अगर मेरी बेटी एक पल भी मुझसे दूर हो जाती है तो बैचन हो उठती हूं।

बातों ही बातों में न जाने कब सुबह हो गई पता ही नही चला। फ्रेश होने के लिए बाथरूम जाना था, चूंकि अक्सर मेरे साथ मेरे पति यात्रा करते है, किंतु आज वो साथ नही थे तो मैं अपनी बेटी को उस नर्स को सौंपकर ब्रश करने चली गई। बाथरूम के पास जब मैं ब्रश कर रही थी तो, मेरे मन में ख्याल आया कि मैं कैसे अपनी प्यारी सी बेटी को किसी अजनबी के भरोसे छोड़ कर आ सकती हूं। मेरी गुड़िया तो बोल भी नही सकती है। अपना नाम, मम्मी-पापा कौन है? कुछ भी तो नही बता सकती वो। अगर उस औरत ने मेरी बच्ची को किसी बच्चा चोर गिरोह को बेच दिया तो, वो मेरी बेटी के साथ क्या क्या करेंगे?

मेरे मन में अजीब-अजीब से ख्याल आ रहे थें। इन ख्यालों से मैं इतना डर गई कि तुरंत ही वापस लौट आई। ज्यों-ज्यों मेरे कदम मेरी सीट की तरफ बढ रहे थे मेरी बेचैनी ओर भी बढ़ती जा रही थी। मैं भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि मेरी बेटी को बचा ले। अगर मेरी बेटी वहां नही होगी तो, मेरी तो जान ही निकल जाएगी।

किंतु ज्योंहिमैं अपनी सीट के पास पहुंची तो क्या देखती हूं कि मेरी बेटी अपने छोटे-छोटे दोनों पैरों के बीच में दूध से भरा ग्लास लिए उसमें बिस्कुट भिगोकर खा रही थी। और वो नर्स औरत भी अपने हाथों से उसको बिस्कुट खिला रही थी। वह कितनी अच्छी औरत थी और मेरे मन में न जानें क्या-क्या ख्याल आ रहे थे।

मुझे मन ही मन एक अजीब प्रकार की गिलानी महसूस हुई। मैने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया और अपने मन की कुपित विचारों के लिए क्षमा भी मांगी।

कुछ सालों बाद मुझे भी एक नौकरी मिल गई। नौकरी चूंकि दूसरे राज्य में थी तो मुझे अपने बच्ची के गांव में ही छोड़कर जाना पड़ा। एक मां का मन ही ऐसा होता है कि अपने बच्चों को बिना एक पल देखे भी रहा नही जाता है। जब रात में नींद नहीं आती है तो मुझे वो नर्स याद आती है, जो अपने बच्चों से दूर एक नर्स के रूप में अपने देश की सेवा कर रही है।
मां तो मां होती है। उसका अपने बच्चों के प्रति रिश्ता अटूट होता है, जो कभी नहीं टूटता है। अब चूंकि मैं नौकरी पर हूं तब भी कोई भी ऐसा पल नही होता है, जब मैं अपने बच्चों को याद न करती हूं।

यह कहानी उन सभी कामकाजी महिलाओं को समर्पित जो कुछ कमाने के लिए अपने घर से दूर किसी दूसरी जगह, किसी दूसरी संस्कृति के लोगों के बीच रहकर काम करती है और अपने बच्चों का भी ध्यान रखती हैं।

"मां" एक ऐसा शब्द, जिसमें सारी दुनिया समा सकती है।

****

भारत में रोजगार

एम.कनिमोष़ी, ट्रैक मेंटेनर/उ/सेलम

भारत की गिनती तेजी से बढ रही अर्थव्यवस्था के रूप में तथा मानव संसाधनों के विशाल स्रोत के तौर पर भी होती है । अनुमान है कि भारत 2022 तक दुनिया में सबसे अधिक युवाओं वाला देश बनने को तैयार है । भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी तकरीबन 40 फीसदी है। आबादी का यह हिस्सा सबसे ऊर्जावान तथा सक्रिय तबका है । यह देश का सबसे कीमती मानव संसाधन है ।

रचनात्मक प्रतिभाओं के इस युवा वर्ग के लिए रोज़गार तमाम सरकारों की बड़ी चिंता रही है । स्वतंत्रता के अनंतर भारत में मुख्य तौर पर कृषि अर्थ व्यवस्था थी । धीरे-धीरे आधुनिकीकरण तथा औद्योगीकरण का चलन रफ्तार पकड़ने लगा । आजकल स्वरोजगार को बढ़ावा देने के तौर तरीकों पर जोर दिया जा रहा है । इसका एक कारण होता है । नए रोजगार के लिए नौकारियों और उनके साथ वेतन भत्तों के प्रस्ताव अक्सर उम्मीदवारों की आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं होते । स्वरोजगार ही इसका समाधान है ।

रोजगार का सृजन - रोजगार के संबंध में तीन वास्तविकताएँ हैं । 1) करीब 80 प्रतिशत रोजगार असंगठित क्षेत्र में है । 2) नई अर्थ व्यवस्था को गति देने के लिए वर्तमान प्रयासों ने असंगठित क्षेत्र में रोजगार के कई अवसर खोले है । तीसरा है, जैसे पहले उल्लेख किया गया है कार्य के अनुरूप वेतन नहीं मिलता अर्थात आकांक्षाओं के अनुरूप नौकरी नहीं ।

रोजगार के संबंध में विश्लेषण करने के लिए विश्वसनीय आकडों की स्रोत चाहिए सांख्यिकीय और कार्यक्रम मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय की ओर से किया गया रोजगार-बेरोजगार सर्वेक्षण समग्र सर्वेक्षण है । इससे देश के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में कृषि,उद्योग,सेवाओं आदि जैसे क्षेत्रों में श्रम शक्ति की पूरी तस्वीर साफ हो जाती है। रोजगार के संदर्भ में अनौपचारिक अथवा असम्मिलित क्षेत्र में रोजगार के बेहतर अनुमान नहीं लगाए जाते, तब तक रोजगार स्थिति या किस हद तक रोजगार सृजन हुआ है । उसके बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचना भ्रामक होगा। भारत के संदर्भ में 70 लाख से 85 लाख नई नौकरियाँ नए लोगों को रोजगार देने के लिए काफी हैं । एक सुरक्षित अनुमान है कि औपचारिक क्षेत्र वर्ष में लगभग 70 लाख रोजगार सृजित करता है । भारत में रोजगार सृजन की समस्या नहीं है परंतु वेतन की समस्या है । कम वेतन में विशेषकर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में देश के नागरिक एक आरामदायक और उत्पादक जीवन नहीं जी पाते हैं ।

भारतीय अर्थव्यवस्था में संगठित-असंगठित ग्रामीण-शहरों कृषि-गैर कृषि, कुशल-अकुशल जैसे पहलू एक साथ मौजूद है । एक तरफ जहाँ अकुशल कामगार वर्ग को कौशल से लैस करने की जरूरत है वही असंगठित क्षेत्र के

कर्मचारियों को संगठित दायरे में लाने की सरकार है । भारत में रोजगार में कृषि का हिस्सा आज भी काफी बड़ा है । छोटे-छोटे स्तर पर विनिर्माण, प्रसंस्करण, मरम्मत, निर्माण और शेष सेवाओं की भी ग्रामीण परिवारों की आय में बड़ी हिस्सेदारी है । कृषि - क्लीनिक, कृषि-व्यवसाय केंद्र, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन आदि ने ग्रामीण इलाकों में गैर-कृषि रोजगार को काफी बढ़ावा दिया है । सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग हमारे देश के समग्र औद्योगिक क्रिया कलापों में महत्वपूर्ण योगदान देकर रोजगार सृजन को बढ़ावा देने में महती भूमिका निभा रही है । स्वरोजगार एवं अन्य रोजगार के अवसर सृजित करने की दिशा में यह क्षेत्र कृषि क्षेत्र के बाद सर्वाधिक अवसर उपलब्ध करवाता है ।

अर्थव्यवस्था की सफलता सीधे देश में रोज़गार की स्थिति से जुड़ी है । पूर्ण रोज़गार एक ऐसी आर्थिक स्थिति है जहाँ सभी उपलब्ध श्रम संसाधनों का इस्तेमाल यथासंभव सबसे दक्ष तरीके से किया जाता है । रोज़गार के मोर्चे पर हालिया बढोत्तरी के साथ ही भारत अब विकास की रफ्तार में पीछे नहीं है ।

दूरदर्शन

श्री अभिषेक कुमार,
स्टेशन मास्टर/सेलम टाउन/सेलम मंडल

"जाने कहां गए वो दिन कहते थे तेरी राह में नज़रों को हम बिछाएंगे" जी हाँ मै बात कर रहा हूँ 'दूरदर्शन' टेलीविजन चैनल के बारे में। यदि आप भी 90 के दशक के आस-पास बड़े हुए होंगे तो दूरदर्शन ही आपके मनोरंजन का एक मात्र स्त्रोत था।

वो भी क्या दिन थे। सप्ताह में एक बार फिल्मे देखना, चित्रहार की प्रतिक्षा करना ताकि आप कुछ गाने देख और सुन सके भले ही आप इसे कुछ समझ नहीं पाए। ये कुछ ऐसी यादें है जिनके माध्यम से आप दूरदर्शन के कुछ अच्छी-पुरानी बातों को याद कर सकते है। हमारे पास अब चैनलों व अनगिनत कार्यक्रमों की संख्या है तथा हाथ में मोबाइल फोन भी है लेकिन वास्तव में हम सिर्फ चैनल सिरफिंग करते है। जहां पहले के धारावाहिक मनोरंजन के साथ-साथ जीवन के गुढ रहस्यों के बारे में सिखाते थे वही आज के टीवी शो सास-बहु के झगड़े व घर तोड़ने की कहानियां परोसते है।

मुझे यकीन है कि आप इन सभी कार्यक्रमों को याद करते है जिन्हें आप बचपन में देखा करते थे। वो सभी धारावाहिक चाहे वह रामानंद सागर के द्वारा निर्देशित 'रामायण' व 'श्री कृष्णा' हो या मुकेश खन्ना का वो 'शक्तिमान' अगर आप 90 के दशक के नहीं है फिर भी अगर वो लोग भी इन सभी धारावाहिक को देखे तो वे लोग भी उन पुराने दिनों की यादों को अपने जहन में बसा सकते हैं। आइए आपको ले चलते है उन पुराने दिनों में जहां आप अपने पुरानी यादों को फिर से ताजा कर सकते है-

1. रामायण- एक बहुत ही सफल भारतीय टीवी श्रृखंला है जिसका निर्माण एवं निर्देशन रामानंद सागर द्वारा किया गया था। यह धारा वाहिक काफी लोकप्रिय हुआ। लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है जब इस धारावाहिक का प्रसारण होता था तब रेलगाड़ी, बसे और ट्रक रुक जाते थे औरग्रामों में बड़ी संख्या में लोग टीवी के सामने देखने के लिए एकत्रित होते थे। रामायण, भारत और विश्व टेलिविजन इतिहास में सबसे अधिक देखा जानेवाला कार्यक्रम बन गया। 2003 जून तक " लिमका बुक ऑफ रिकॉर्डस" में भी सूचीबद्ध रहा।

2. श्री कृष्णा – रामानंद सागर द्वारा निर्देशित यह धारावाहिक का भी दूरदर्शन पर साप्ताहिक प्रसारण किया जाता था। यह धारावाहिक भगवान श्री कृष्ण के जीवन से संबंधित कहानियों पर आधारित है।

3. महाभारत – बी.आर. चोपड़ा द्वारा निर्मित और उनके पुत्र रवि चोपड़ा द्वारा निर्देशित महाभारत एक भारतीय पौराणिक काव्य पर आधारित धारावाहिक है। यह विश्व में सर्वाधिक देखा जानेवाला धारावाहिकों में से एक था। इसका प्रसारण ब्रिटेन में भी बीबीसी द्वारा किया गया था।

4. शक्तिमान- उस जमाने में भारत का एक मात्र सुपर हिरो शक्तिमान । इसे प्रस्तुत मुकेश खन्ना और निर्देशित दिनकर जानी ने किया । शक्तिमान अपने समय के सभी भारतीय बच्चों के पहली पसंद रहा है। अगर आज भी युवावों से पुछा जाए कि आपका पसंदीदा धारावाहिक कौन है तो वो भी शक्तिमान ही बोलेंगे।

5. चंद्रकांता- "चंद्रकांता की कहानी ये माना है पुरानी ये पुरानी होकर भी बड़ी लगती है सुहानी" इस टाईटल वाले गाने को सुनकर ही मन खुश हो जाता था। यह आंशिक रूप से बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यास पर आधारित एक टीवी सीरियल था। निरजा गुलेरा प्रोडक्शन में बनने वाली इस सिरीज को सोनी लाल नेत्री नें निर्देशित किया था। कई वर्ष बीत जाने के बाद भी आज भी "क्रुर सिंह" का वह भयानक चेहरा याद रहता है।

इसके अलावे भी अनेक ऐसी धारावाहिक है जो काफी पसंद किया गया था। उस समय जैसे- अलिफ लैला, व्योमकेश बक्शी, चित्रहार , रंगोली, मालगुड़ी डेज, विक्रम बैताल आदि लोकप्रिय धारावाहिक दूरदर्शन पर आते थे।भले ही आज के वर्तमान समय में इंटरनेट के द्वारा ही क्लिक में सारे मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध है लेकिन उस समय की कुछ बात ही अलग थी। गुलाम अली - " हमे तो अभी वो गुजरा जमाना याद आता है"।

****

'हिंदी बड़ी महान'

श्रीमती सपना सोनी,
स्टेशन मास्टर/ मैग्नेसाइट जं./सेलम मंडल

हिंदी बड़ी महान, राजभाषा की है अपनी शान,
अंग्रेजों को मार गिराया, फिर भी रह गई अंग्रेजी,
हर तरफ अंग्रेजी का बढता चलन, हर तरफ अंग्रेजी का उद्योग
बिना अंग्रेजी बोले रौब न जमता, अंग्रेजी में होना हर कामकाज।
गौरवशाली महापुरूष हुए है, जिन्होने दिया हिंदी को मान
गाँधी जी का सपना हिंदी, स्वराज-हिंद का लक्ष्य हिंदी,
विनोबा जी का चिंतन हिंदी, मोदी जी का भाषण हिंदी।
हिंदी की है शाख निराली, इसके जैसा कोई नहीं,
पढ लो हिंदी, बोलो हिंदी, कामकाज में प्रयोग करों हिंदी,
हिंदुस्तान की शान बढाओ, हिंदी बोलकर मान बढाओं,
अपनाओ इसे ये है कर्तव्य हमारा, मानो न मानो यह है भविष्य हमारा।
आभा कभी कम न हो मातृ –भाषा की यू ही चमकती रहे हमारी हिंदी,
गीता पढ लो, रामायण पढ लो और पढ लो वेद महान,
हिंदी में सार छिपा है, हिंदी में मिलता सारा ज्ञान,
इतिहास में भी हिंदी बड़ी महान, हिंदी है मेरी जान।
संस्कृत है अन्य भारतीय भाषाओं की जननी, यही है आन भारतीयों की ,
हिंदी है ईमान हमारी, हिंदी से है पहचान हमारी,
ऊँच- नीच की बात न जाने, यह सबको समान माने,
हिंदी बड़ी महान, यही है हमारी शान, मान और अभियान।

****

हिंदी और भारतीय भाषाओं का आंतरिक संबंध: (एक विवेचना)'

श्रीमती सपना सोनी,
स्टेशन मास्टर/ मैग्नेसाइट जं./सेलम मंडल

विश्व आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमे कई स्तरो पर बदलाव आए है भूमंडलीकरण के कारण लोगों के सांस्कृतिक, भाषाई और देशज सोच में बदलाव आए है। भारतीय समाज में इस बदलाव का असर कही अधिक देखा जा रहा है। जिससे लोगों में मूल्यों से अधिक सुख-सुविधाओं के प्रति कही ज्यादा मोह बढा है। पैसा जीवन का पर्याय बन गया है। सांस्कृतिक और भाषाई चेतना को लेकर संकट महसूस होना लाजिमी है।

जिस प्रकार स संस्कृतियों का वर्षों से अंत:संबंध रहा है उसी प्रकार से भाषाई अंत:संबंध भी रहा है लेकिन इस अंत:संबंध को हमने कभी गहराई से समझने का प्रयत्न किए ही नहीं, यही कारण है हम एक देश में रहते हुए भी आंचलिकता के संकीर्ण खूटे में बंधे रहे और इसी को पूर्णता समझते रहे। इस संकट को महर्षि दयानंद और महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता के बहुत पहले ही समझ लिया था इतना ही नहीं, अंग्रेजों के सम्मोहन में बंधे भारतीयों की मन: स्थिति का अनुभव भी कर लिया था। अंग्रेजी का खतरा केवल हिंदी के लिए ही नहीं, अपितु भारतीय भाषाओं पर भी उसी तरह से है । गाँधी जी कहते थे- " आप और हम चाहते है कि करोड़ों भारतीय आपस में अंत:प्रांतीय संपर्क कायम रखे", तो स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा दस पीढियां गुजर जाने के बाद भी हम परस्पर संपर्क स्थापित न कर सकेंगे" स्पष्ट है कि सात दशक व्यतित हो जाने के बाद भी गाँधी द्वारा महसूस किया गया भाषाई संकट आज भी उससे कही अधिक गहरा हो गया है । हम भले ही इसे राजनीतिक षड़यंत्र या स्वार्थ का पर्याय बनाए लेकिन सच यह भी है कि हिंदी और हिंदीत्तर भाषाओं का आपसी भाईचारा कायम करने में यह सबसे बड़ा बाधक रहा है। अब जबकि हिंदी का संकट अन्य कई तरह से हमारे सामने दृष्टव्य होने लगा है, भारतीय भाषाओं का आपसी भाईचारा का मुद्दा गौण होता जा रहा है। ऐसे में डॉ. रामविलास शर्मा का यह कथन कितना प्रासंगिक हो जाता है- " हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले इसके बजाय यह वातावरण बनाना चाहिए की सभी भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी का स्थान ले।"

हिंदी की व्यापकता का दायरा उसके संग्रहणीयता और उदारता के कारण है। यही कारण है कि देश के प्रत्येक अंचल में हिंदी उस आंचलिक भाषाई मिठास के रूप में उपस्थिति है। लेकिन यह मिठास तब खटास में बदल जाती है जब इसमे अंग्रेजी घृणात्मकता और तथाकथित विकास के मान पर मिलाई जा रही है।स्पष्ट है, हिंदी में उदारता के नाम पर उसे उसकी मौलिकता, नवीनता और सृजनात्मकता को धूमिल किया जा रहा है। हिंदीभारतीय भाषाओं कीमिठास, नवीनता और सृजनात्मकता की पवित्रता से वंचित होती जा रही हैष इसे

इस रूप में भी हम समझ सकते है कि हिंदी अंग्रेजी की वैज्ञानिकता दब गई और विचित्रात्मकता के कारण हिग्लिश के रूप में अपना स्वभाव खोती जा रही है। निर्मित होने की जगह खण्डहर में बदलती जा रही है। आवश्यकता है भारतीय भाषाओं के शब्दों, शैलियों और सांस्कृतिक चेतना से लबरेज होकर हिंदी और भी सहज और संग्रहणीय बने लेकिन हो रहा है इसका ठीक उल्टा। इससे हिंदी का अन्य भारतीय भाषाओं का अंत:संबंध बढने और गहरे होने के स्थान पर दुरूह होते जा रहे है। इस पर दृष्टि डालने की आवश्यकता है।

भारत सांस्कृतिक विविधता के साथ ही साथ भाषाई विविधता वाला देश है। ' कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बदले वाणी ' की कहावत इसी परिप्रेक्ष में प्रचलित रही है। अनेक बदलाव के बाद भी आज भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता अपने मूल स्वरूप में कायम दिखाई देती है। जब हम भाषाई विविधता की बात करते है, तो हमारे सामने भारत में बोली जाने वाली प्रादेशिक भाषाओं की बात ही नहीं आती बल्कि सैकड़ों की तादाद में बोली जानेवाली बोलियाँ भी इसमें सम्मिलित होती है। भारतीय संस्कृति और समाज के विकास में किसी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। हमारे लिए जितनी महत्वपूर्ण हिंदी है उतनी ही तमिल, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी, डोंगरी, बोड़ो, मलयालम, बंगला, असमिया, मराठी और कश्मीरी है। यदि हिंदी राजभाषा और राष्ट्रभाषा रूपी गंगा की धारा है तो अन्य प्रादेशिक भाषाएँ भी कावेरी, सतलज और ब्रह्मपुत्र की धारा है। जैसे सभी नदियां बहते हुए समुद्र में मिलकर एक हो जाती है उसी तरह से भारत की सभी भाषाओं का मिलान भी निरंतर होता रहता है। सुब्रह्मण्यम भारती ने कभी कहा था –" भारत माता भले ही 22 भाषाएँ बोलती हो फिर भी उसकी चिंतन प्रक्रिया एक ही है ।"

आज भूमंडलीकरण का दौर है । भाषा विदेशी संस्कृति के आगे दबती नजर आ रही है। लेकिन इस बात को नहीं नकारा जा सकता कि भारतीय भाषाओं के अंत:संबंध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता आज पहले से और भी अधिक महत्व की हो गई है। अपनी पहचान के लिए हमे हर हाल में इस संबंध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। इन्ही से हमारी पहचान है। हिंदी दशकों पहले इस देश की राजभाषा बनी थी, लेकिन राष्ट्रभाषा कब बनेगी, इस पर न तो कोई राजनेता बोलने की स्थिति में है, न तो हिंदी के ध्वजवाहक ही। हिंदी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना बहुत ही अवश्यक है और हिंदी न तो बिना भारतीय भाषाओं के सहयोग से जीवित रह सकती है और न भारतीय भाषाएँ हिंदी के बिना जिंदा रह सकती है। सदियों से हिंदी और भारतीय भाषाओं का जो अंत:संबंध रहा है, कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किसी भी भाषा ने किया है तो वह हिंदी ही है। इसलिए हिंदी किसी भारतीय भाषा के लिए खतरा बनेगी प्रश्न ही नहीं उठता है। हिंदी और भारतीय भा।ओं को खतरा तो अंग्रेजी और हिग्लिश से है। इसलिए वक्त की नजाकत को समझते हुए प्रत्येक देशवासी को हिंदी या भारतीय भाषाओं के अत:संबंधों पर सवाल न उठाकर अंग्रेजी की बढ़ती एकाधिकारिता पर सवाल उठाने चाहिए। अबसमय आ गया है है कि हिंदीत्तर भाषा प्रदेशों को नए सिरे से हिंदी को अपनी प्रांतीय भाषा के संबंधों से विचार – विमर्श करना चाहिए।

भाषा के बिना न तो किसी देश की कल्पना की जा सकती है और न तो किसी समाज की ही। इसलिए भाषा की उपेक्षा का मतलब स्वयं अपने अस्तित्व को ही नकारना जैसे विविधताओं के बीच भी सांस्कृतिक आदान- प्रदान कभी नहीं रूकता इसी तरह भाषाई विविधता के होते हुए भी भाषाओं के मध्य अदान-प्रदान नहीं रूकता। वह चाहे भाषाई संस्कृति के रूप में हो, या व्याकरणिक रूप में या वचनात्मक रूप में हो। भाषाओं के अंत:संबंध को न तो रोका जा सकता है और न तो समाप्त किया जा सकता है।

हिंदी हमारे देश की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है । आजादी के पहले भी यह संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती रही है। यही कारण है कि हिंदी के अनेक शब्द, क्रियापद और संज्ञाएं भारत की अनेक प्रांतीय भाषाओं में उसी अर्थ में या दूसरे अर्थ में मिल जाते है। इतना ही नहीं हिंदी की सहजता, वैज्ञानिकता और रागात्मकता भी भारत की प्रांतीय भाषाओं में मिल जाती है। यह सब सहज रूप में हुआ है, हिंदी के लिए जितना हिंदी भाषा-भाषियों के लिए महत्व है, उससे कही अधिक गैर-हिंदी भाषी के लिए महत्व है। वह हिंदी को उसके शुद्धात्मक रूप में अपनाने का कही अधिक प्रयास करता है।

हिंदी न किसी प्रांत की भाषा रही है और न तो किसी जाति, वर्ग या क्षेत्र विशेष की भाषा रही है। हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सबके लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। यही कारण है गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों के हिंदी उन्नायकों ने हिंदी को जन भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया और उसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। वह चाहे गुजराती भाषा –भाषी महर्षि दयानंद और गाँधी रहो हो, बंगाल के राजाराम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रविन्द्रनाथ टैगोर तथा सुभाष रहो हो या महाराष्ट्र के नामदेव, गोखले और रानाडे रहे हो। इसी तरह तमिलनाडु के सुब्रह्मण्यम भारती, पंजाब के लाला लाजपत राय, आंध्र प्रदेश के प्रो. जी. सुंदर रेड्डी जैसे अनेक हिंदी भाषा – भाषी क्षेत्रों में हिंदी को बढावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किए।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का अंत:संबंध प्रगाढ होने में सबसे बड़ी बाधा अंग्रेजी रही है।अंग्रेजों ने स्वतंत्रता के पूर्व ही इसका जाल तैयार कर दिया था और भाषा जो हमारे जीवन, समाज ऐऔर संस्कृति का अभिन्न अंग है को राजनितिक रंग दे दिया था।स्वतंत्रता के 72 वर्षों बाद आज हम हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के संबंधों का अवलोकन करते है तो पाते है कि ये संबंध , सुदृढ होने की जगह निरंतर कमजोर हुए है। हिंदी वाले को तमिल, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी और उड़िया शब्द संसकृति में तैरने की जगह अंग्रेजी के जाल – जंजाल में अधिक फसता रहा है। इस विडंबना और संकट को वर्षोंपूर्व हिंदी के महान उन्नायक फादर कामिल बुल्के ने समझ लिया था। डॉ. बुल्के कहते है- " भारत पहुँचकर मुझे यह देख कर दुख हुआ कि बहुत शिक्षित लोग अपनी ही संस्कृति से नितांत अनभिज्ञ है और अंग्रेजी बोलना और विदेशा सभ्यता में रंग जाना गौरव की बात समझते है।"

हम भले ही हिंदी का विरोध करने वाले दक्षिण के कुछ राज्यों के अंग्रेजी परस्त राजनेताओं के स्वार्थवादी और संकीर्णवादी विरोध को अपने अनुसार अलग-अलग तर्कों से इसे किंतु-परंतु में उलझाकर इसे दरकिनार कर दे, लेकिन इस वास्तविकता को कैसे झुठला सकते है कि पीछे मुख्य रूप से भारतीय भाषाई सांस्कृतिक चेतना

को कमजोर करने का ही उद्देश्य रहा है। अंग्रेजी को यदि भारतीय अस्मिता संस्कृति और सुख का पर्याय बनाना है तो सबसे पहले हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अंत:संबंध की कमी को मजबूत नहीं बनने देना है। इस घृणित मंसूबे के कारण ही अंग्रेजी का प्रभुत्व लगातार भारतीय भाषाई चेतना को अचेतन बनाना रहा है। इसे समझने की अवश्यकता है।

इस सच्चाई को हम कैसे झुठला सकते है कि आज भी तमिल, कर्नाटक, आंध्र, केरल, त्रिपुरा, असम, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे अनेक राज्यों में हिंदी समझने वाले, बोलने वाले ही नहीं हिंदी में लेखन करने वाले सैकड़ो लेखक, पत्रकार मिल जाते है। जो हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए पूरे मनोवेग से कार्य कर रहे है। इससे हिंदी की अन्य भारतीय भाषाओं के अंत:संबंध में मजबूती आ रही है। लेकिन यह आवश्यकता से बहुत कम है या कहे ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। नव लेखक हिंदी को अन्य भाषाओं के साथ सह अंत:संबंध को सबसे अधिक प्रगाढ़ बनाने की बात करते दिखे। इतना ही नहीं तमिल के शब्दों को भी हिंदी में प्रयो करने के आश्चर्यजनक तजुर्बे भी हे।

हिंदी का स्वभाव और भारतीय भाषाओं का स्वभाव एक जैसा है । किसी भी स्तर पर टकराव नहीं है। फिर क्यों हिंदी का विरोधगैर हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में यत्र-तत्र देखा जाता है? यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। दरअसल, आजादी के पहले अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण कराया था, उसके पीछे न कोई तथ्य, व्याकरण और लिपि का आधार था और न ही सांस्कृतिक या धार्मिक । भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण इस तरह से किया गया जिससे यह साबित हो सके कि आर्य भाषा परिवार की भाषाओं और द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं में न पूरकता है और न हीअंत:संबंध ही है जिससे उन्हे भाषा के नाम पर भी देश को विभाजित कर राज करने में सुविधा हो सके। गौरतलब है 'आर्य भाषा परिवार' का नाम करण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल के द्वारा किया गया।

आधुनिक भारतीय भाषा की दृष्टि आज भी वैसी ही है जैसी स्वतंत्रता के पूर्व थी। आज भी भाषा वैज्ञानिक यह मानते है कि भारत की आर्य भाषाओं का ईरानी, यूनानी, जर्मन और लटीनी भाषाओं से किसी-न-किसी स्तर पर अंत:संबंध है। लेकिन विंध्यांचल के दक्षिण में प्रचलित भाषाओं का कोई संबंध नहीं जुड़ता है। हम सभी इस बात पर विचार करने के लिए तैयार नहीं है कि दक्षिण की भाषाएँ द्रविड़ परिवार की है और उत्तर भारत की भाषाएं आर्य परिवार कीहै। इस धारणा को दृढता प्रदान करने में पादरी कॉल्डवेल की पुस्तक द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन का योगदान सबसे अधिक रहा है। स्पष्ट है जब भी इस विषय पर चर्चा होती है तो भारत के भाषा वैज्ञानिक उक्त पुस्तक का हवाला देकर यह साबित करने की कोशिश करते है कि फादर कॉल्डवेल का शोध इस संबंध में भाषाई अंत:संबंधों को समझने में मील का पत्थर है। वही पर इस धारणा को अपने शोधपरक और तथ्य परक निबंध 'भारत एक भाषाई क्षेत्र ' में कहा है- " एक ही भू-खंड की भाषा होने के कारण उत्तर और दक्षिण भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना में प्रकृति और प्रत्यय मे शब्द और धातु में भावधारा और चिंतन प्रणाली में और कथन –शैली में प्रत्येक स्तर पर सामानता दिखाई पड़ती है।"

आचार्य काशीराम के शोध के अनुसार दक्षिण भारत की भाषाएँ और हिंदी का उद्भव एक ही है। कहने का मतलब यह है कि जो अलगाव विदेशी भाषाविद् भारतीय भाषाओं में दिखते है वह कही न कही उनके दुराग्रह और स्वार्थवादी प्रवृति के कारण ही है।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में साम्यता एक स्तर पर है। सैकड़ो की संख्या में ऐसे शब्द है जो हिंदी में भी इस्तेमाल किए जाते है और अन्य भारतीय भाषाओं में भी। उदाहरण के लिए तेलुगु में प्रयुक्त दर्जी शब्द हिंदी में भी प्रयोग होता है और अन्य दूसरी भाषाओं में भी। इसी तरह कागज, ताला, फकीर, ताजा, अम्मा आदि जैसे अनेक शब्दों का प्रयोग हिंदी सहित भारत की अधिकांश भाषाओं में प्रयोग होते है। इसी तरह पंजाबी भाषा जो गुरुमुखी में लिखी जाती है के हजारों शब्द हिंदी में प्रयोग में दिखाई देते है। वस्तुत: ये शब्द संस्कृत से हिंदी और पंजाबी में प्रयोग में आए. आज दोनों भाषाओं में संस्कृत के इन शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले के साथ किया जाता है। यदि लिपि को छोड़ दिया जाए, तो कोई भी हिंदी भाषा –भाषी व्यक्ति जो कुछ पढा - लिखा है उसे पंजाबी समझ में आ जाती है। इसी तरह पंजाबी को हिंदी समझते देर नहीं लगती । दोनों एक ही भाषा परिवार की मानी जाती है। दोनों का प्रयोग सदियों से आपसी भाईचारे को बढावा देने के लिए किया जा रहा है। पंजाब में मध्यकाल में ब्रजभाषा और गुरुमुखी लिपि में, इसके सुमेल से हा हिंदी साहित्य का सृजन हुआ। गुरु गोविंद सिंह और इनके दरबारी कवि, पंजाब के दूसरें राज्याश्रित कवि गुरुमुखी लिपि में ब्रजभाषा में रचना करते थे। यह निकटता हिंदी और पंजाबी संस्कृतियों को भी रेखांकित करती है। पंजाबी और हिंदी भाषा के अंत:संबंध भक्तिकाल, गुरुवाणी और आधुनिक युग के साहित्य में भी सहज सुलभ है। प्रो. पूर्ण सिंह, अमृता प्रीतम, देवेन्द्र सत्यार्थी और अझीत कौर जैसे न जाने कितने रचनाकार जो पंजाबी पृष्ठभूमि के होते हुए भी हिंदी में सभी को स्वीकार हुए।

इस बात को कितने लोग जानते है कि जिस लिपि देवनागरी में हिंदी- संस्कृत लिखी जाती है, उसी लिपि में कश्मीरी और मराठी भी लिखी जाती रही है। लिपि की एकता ने भी हिंदी को मराठी, कश्मीरी के पास आने का अवसर दिया। इसी तरह गुजराती लिपि भी कुछ अंतर से देवनागरी जैसी ही है। गुजराती और हिंदी का अंत:संबंध जग जाहिर है। गुजराती भाषियों ने हिंदी को बढावा देने के लिए क्या नहीं किया।

इसी तरह मलयालम में अस्सी प्रतिशत शब्द संस्कृत से सीधे ग्रहण किए गए है। मलयालम बोलते समय एसा लगता है कि बोलने वाला संस्कृत के बदले हुए रूप वाली भाषा बोल रहा है।

उच्च स्तर के अनुसंधानों से यह साबित हो चुका है कि हिंदीत्तर प्रदेशों में रचा गया हिंदी साहित्य परिणाम में अतुलित तो है ही, साहित्यिक विशेषताओं से भी उत्कृष्ट कोटी का है। इस बात को हिंदी भाषा – भाषी क्षेत्र के लोगों को समझनी चाहिए कि जिस प्रकार से हिंदीत्तर प्रदेशों में हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए गैर- हिंदी भाषा – भाषी लेखक, पत्रकार और हिंदी प्रचारकों ने अपना जीवन समर्पित करके हिंदी को सर्वसुलभ और सर्वमान्य भाषा बनाने में लगे हुए है। उसी तरह अन्य भारतीय भाषाओं को भी हिंदी क्षेत्र के लोगों को सीखना चाहिए और जहां तक हो सके, संबंधों में जीना चाहिए। इससे हिंदी और अच्छी तरह से देसभर में आगे बढ सकेगी।

****

पहला प्यार

प्रवीण कुमार, अमंविप्र/असनसोल

लौट कर के न आई
तू पनघट पे फिर,
रूह रोती रही
दिल तड़पता रहा,
आंसुओं को मिला
छींटों के बूंद संग,
मीठे अहसासों को
खारा करता रहा!
आसमाँ से बरसता रहा खालीपन,
सूखने से लगे हर संजोए सपन,
धू- धू कर जल रही मीठी यादें मेरी,
पानी में घुल गया गुमशुदा मेरा मन,
लौट कर जाती लहरों के संग- संग मेरा,
प्रेम का नाव गोते लगाता रहा!
लौट कर के न आई.....
तू जो आती तो रखता

यूँ काँधे पर सर,
बाहों में बांह डाले
गुजरते पहर,
दूर डूबा सूरज
स्वर्ण - तमगा लिए,
कैद करते उंगलियों में
उंगली पकड़,

खिलखिलाती सी तुम
मुस्कराती सी तुम,
मन की बगिया में
कलियां खिलाती सी तुम,
अब जो अंधेरे में
थक गई कल्पना,
गढ नया गीत मैं
गुनगुनाता रहा...

लौट कर के न आई
तू पनघट पे फिर....

बच्चों की परवरिश और संस्कार

श्री सुनिल कुमार,
निरीक्षक/ रेसुब/सेलम मंडल

मानव जीवन में संस्कारों का बड़ा महत्व है । परिवार ही संस्कारों की प्रथम पाठशाला है । बच्चों में संस्कारों का विकास, हमेशा अपने से बड़ो को देखकर होता है इसलिए अपना आचरण सही रखना उतना ही जरूरी है जितना बच्चे पर ध्यान देना । कहते है न 'अगर ठीक से खाद डाली जाए तो पौधा बहुत सुंदर होता है ।' अक्सर देखा गया है कि किसी बच्चे की खराब आदतों को देखकर लोग फब्तियां कसते है कि इस बच्चे को अच्छे संस्कार नहीं मिले । क्या संस्कारों को जबरन किसी बच्चे पर थोपा जा सकता है या उन्हें रटाएं जा सकते हैं ? जब बच्चा चीजों को जानने, समझने लगता है, तभी से उसमें आदतों का विकास शुरू हो जाता है । ऐसे में इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि कहीं हम लाड़-प्यार से अपने बच्चों को संस्कारों से दूर तो नहीं कर रहे हैं । बच्चों की सही परवरिश के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है-

●लोग अपने बच्चों को हर चीज उपलब्ध करवाने की जिद में उनकी हर जायज और नाजायज मांग को पूरा कर देते हैं, जिससे उनमें हर कीमत पर कुछ भी पाने की प्रवृति का विकास होता है । ऐसा करते समय माता-पिता यह नहीं सोचते कि वे अपने बच्चे को सिर्फ लेना सिखा रहे है, देना नहीं ।

●आज का बचपन तकनीक में घुल रहा है । बच्चे सारे काम अंगुलियों के इशारे पर करते हैं । बच्चों का सारा समय फोन पर गुजरता है । वे नहीं समझते है कि क्या सही है और क्या गलत । इसलिए बच्चों के हाथ में तकनीकी खिलौने देने के साथ उन्हें समझाना भी जरूरी है।

●सबसे जरूरी अपने बच्चे को समझना, उनके नजरिए से चीजों को देखना । अपने बच्चों से उनके काम, दोस्तों आदि के बारे में हमेशा बातें करते रहे । कम्युनिकेशन गेप सारी चीजें खराब कर सकता है । जब आप उनके नजरिए से चीजों को देखेगें तभी उनकी भाषा में उनको समझा पाएंगे ।

अंत में आज के समय में हमे हमारे बच्चों को ऐसी शिक्षा व संस्कार देने की अवश्यकता है जिससे वह राष्ट्र की तरक्की में ही स्वयं का हित देखे । स्वामी विवेकानंद ने सही कहा है –'बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है अपना समय और अच्छे संस्कार'। ध्यान रखे, एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ विद्यालय बनाने से भी बेहतर है ।

****